बुंदेली लोक कथाएं एवं गीत

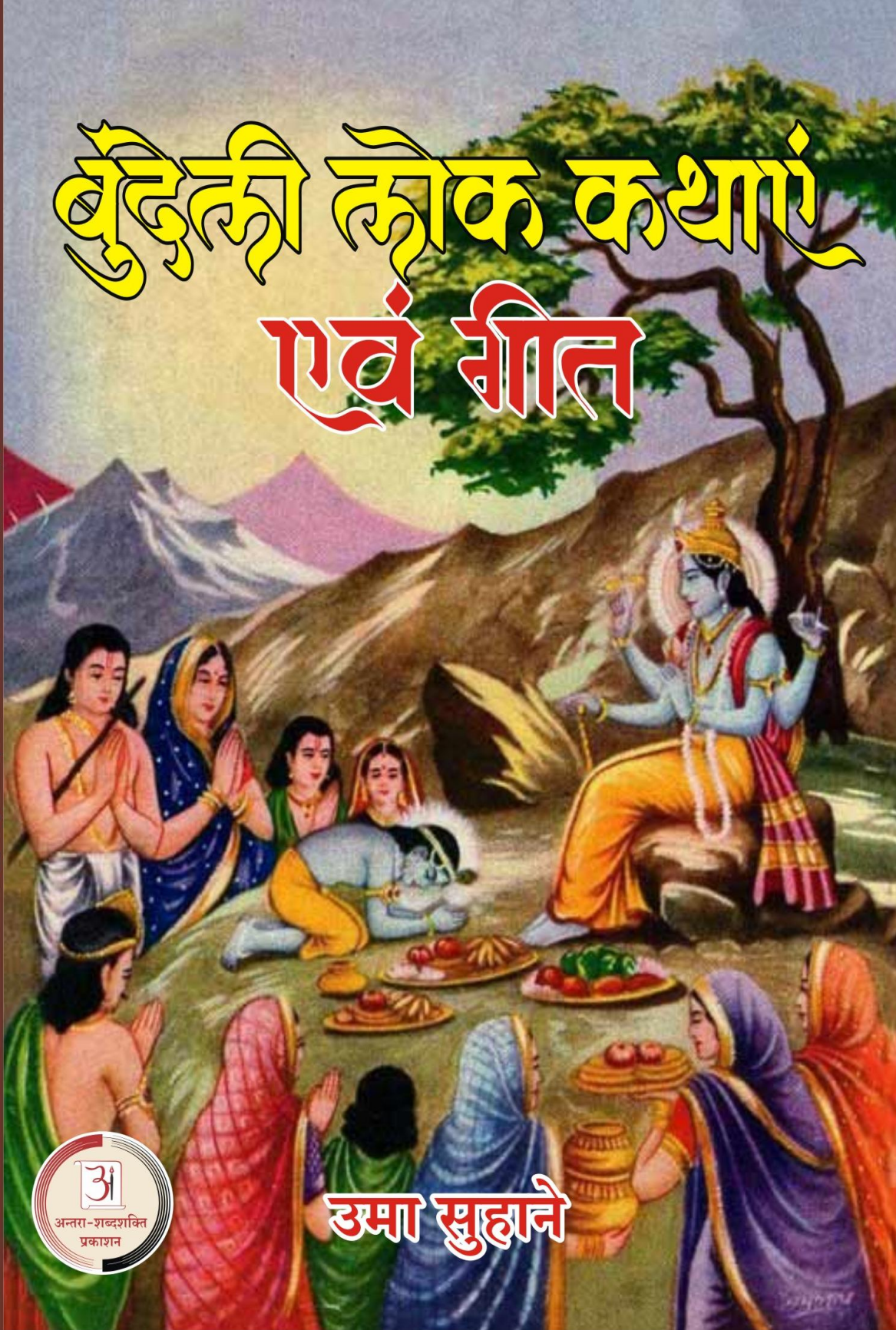

उमा सुहाने

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

बुंदेली लोक कथाएं एवं गीत

बुंदेली लोक कथाऐं एवं गीत

श्रीमती उमा सुहाने

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-248-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- २०२०, उमा सुहाने
मूल्य- २५०.०० रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY UMA SUHANE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकहृपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

जीवन सत्य का दर्शन है, उमा सुहाने का सृजन

सत्यं-शिवम्-सुन्दरम् युक्त मानवीय विचारणा ही भारतीय संस्कृति का लक्ष्य है, इसी विचारणा के गतिशील विन्यास का नाम है संस्कृति।

भारतीय संस्कृति और दर्शन मानव मूल्यों एवं संस्कृति की रक्षा हेतु सगुण, निराकर कर्त्तार सर्वशक्ति सम्पन्न परमात्मा की आराधना ही एक मात्र आधार है। परमात्मा की आराधना एवं सत्यं शिवम सुन्दरम युक्त जीवन शैली जीने के लिए बहुविध मार्ग है। इनमें से एक मार्ग पौराणिक दृष्टान्त का है। पौराणिक कथाएँ जीवन को परमात्मा से जोड़ते हुये सत्यमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

सर्वशक्तिमान, तेजोमय प्रभु अपराशक्ति प्रकृति के लिए भी नियम करणों के निर्माता नियोकता है लीलाधीश्वर आराधना के लिए भारतीय संस्कृति में पल-प्रतिपल दिन-मास और वर्ष भर तीज-त्यौहार है। इन त्यौहारों में प्रभु की विशिष्ट हो जाती है और ही मानवीय मूल्यों का दर्शन भी दृष्टव्य हो जाता है।

परमात्मा की आराधन एवं मूल्यों के निर्माण-उत्थान के लिये तीज त्यौहार की कथा कहानियाँ हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं। ये कहानियां हमारी लोक संस्कृति का हिस्सा है इनमें जीवन के सत्यदर्शन निहित हैं।

समता, ममता, विद्वत्ता, सहजता, सरलता, के प्रतिमूर्ति श्रीमती उमा सुहाने ने संस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण सृजन किया है। यह प्रति उनके सार्थक सृजन का एक पूष्प है। जिसे उन्होंने बुन्देली भाषा में प्रस्तुत करते हुये और भी महत्वपूर्ण बना दिया है।

माननीय उमा सुहाने अनुभवसिद्ध, संस्कार संपन्न सृजन साधिका है। उनका जीवन सहज, सरल, श्रद्धामय, भक्तिपरक और त्यागमय है। उन्होंने समाज के मार्गदर्शन के भूमिका का निष्ठा के साथ निर्वहन किया है। उनका सृजन संसार सत्य से साक्षात्कार करता मानवीय सहिष्णुता और उदारता के

संस्कार से जोड़ा है। लोक संस्कृति की सौन्दर्यानुभूति ने मानवीय उमा सुहाने के सृजन को लोकरंग से जोड़ा है। उन्होंने धर्म आध्यात्म, लोकभाव से जुड़े पक्षों पर गद्य-पद्य दोनों के माध्यम से सृजन किया है।

सर्वनियंता परमात्मा की आराधना के साथ उमा जी ने मान्यताओं और मूल्यों की अभिवंदाना की है। यही कारण है कि उनकी कलम का तेजस आलोक हमारी हृदय का संस्कार करता है।

विदुषी सृजन साधिका माननीय उमा सुहाने के तेजोमय सहज-सरल व्यक्तित्व कृतित्व को नमन करते हैं।

राजेश पाठक प्रवीण
संयोजक सचिव
पाथेयसनाढ्य संगम
जबलपुर, 982762605

मेरी बात

बुन्देली भाषा हिन्दी की ही एक बोली है जो अत्यंत लचीली और हद्यस्पर्शी है। अन्य बोलियों की अपेक्षा यह प्रेम माधुर्य से ओत प्रोत है। मानव जीवन में परिवर्तन अत्यंत आवश्यक है निरंतर एक जैसी जीवन शैली से नीरसता घुटन महसूस करने लगता है यही कारण है कि विश्व की प्रचीनतम भारतीय संस्कृति में ऋषि मुनियों ने मौसम के अनुरूप विविध पर्वों और त्यौहारो का सृजन कर के जहां मनुष्यों को मानसिक तनाव से मुक्त करके आंनदमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी वही आरोग्यता एवं रोग प्रतिरोधात्मक शाक्ति बढाने हेतु खाघ सामाग्रियों के सेवन करने की अनूठी चेतन प्रदान की है।

विभिन्न पवों के आयोजन से मनुष्यों में भगवद् भक्ति, जीवन के प्रति अभिरूचि और आपसी सम्बंधों में प्रगाढता के भाव जागृत होते हैं सम्पूर्ण वातावरण उल्लासमय, मनोरंजक और सोहार्दपूर्ण बन जाता है। यधपि समय समय पर हिन्दूओं के व्रत त्यौहारों की खडी बोली में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं किन्तु बुन्देली भाषा में कही सुनी जाने वाली कथाओ का प्रकाशन कविता सहित किया जाने वाला मेरा प्रथम मौलिक प्रयास है। बुन्देली भाषा में अभिव्यक्ति के माध्यम से मैने प्रभु के प्रति जनआस्था, पारिवारिक सहयोग सम्मान और सद्व्यवहार, यहॉ तक कि प्रकृति के जीव जन्तुओं और पेड़ पौधें के प्रति नेक व्यवहार सहद्यता पूर्ण मनो भावों की पूष्टि की हैं।

भारतीय संस्कृति और परमपराओं के संरक्षण व उनसे होवे वाले लाभकी दृष्टि से प्रत्येक त्यौहारों का पूजा पाठ विधान और खानपान सामाग्रियों का भी स्पष्ट सारगर्भित उल्लेख किया हैं ताकि नवोदित अनभिज्ञ नारियों पुरूषों हेतु मूल्यवान सिद्ध हो सके।

कुछ उद्देश्य पूर्ण बुन्देली गीतों, कविताओं का भी समावेश किया है आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह उपहार आपको अवश्य रूचिकर लगेगा।

उमा सुहाने, रायपुर

अनुक्रमणिका

1.	भाई दोज	7
2.	शीतलाष्टमी ;बासेराद्ध	13
3.	गणगौर	16
4.	पिपरदशा	23
5.	श्री जगन्नाथ स्वामी	27
6.	अक्षय तृतीया (अक्ति)	36
7.	वट अमावश्या	37
8.	गाज बीज	40
9.	हरछठ	44
10.	बछबारस ;गैयाबछिया व्दादशीद्ध	47
11.	हरतालिका वव्र	50
12.	श्री गणेश चतुर्थी ;गनेश चौथद्ध	52
13.	संतान सातें	54
14.	महालक्ष्मी	56
15.	शरद पूर्णिमा	58
16.	आंवला नवमी	60
17.	संकट गणेश	62
18.	सोमवती अमावश्या	65
19.	सुहागिले	68
20.	सातो वार की सात कथा	70
21.	पेड़ का महत्व	85
22.	बेटी को सीख	87
23.	मोबाइल	88
24.	सुनै न सरकार	89
25.	बलम परदेश	90
26.	राम लखन तपसी	91
27.	पति पत्नी में नोक झोक	92
28.	आ गई होरी	94
29.	नौ दुर्गा रूप	95
30.	गांव की नारी	96

।।श्री गणेशाय नमः।।

चैतमास-भाई दोज

जो त्यौहार बहने साल में दो बखत मनाये
एक होरी दोज दूसरां दीवारी दोज टीका लगायें
भैया के लाने बहन कछु करवे में न शरमाए।
आस जोस जोर के उनकी कुशल मनाएं।।

जो त्यौहार भैया बहनन को आय। होरी जरवे के बाद को दोज और दिवारी के बाद की दोज में ज पूजा होत है ईमे बहनें अपने भैयन खौं टीका लगाके उनकी खुशी मनाती हैं।

ई पूजा में गोबर से गांव को चौखटा सो बना लो और उमे गोबरइ की सात बहनें (पुतरिया) सी बना के बैठा लो सबके आगे चूल्हा, तवा, पटाबिल्ला, पीसने चकिया उखरी मूसर और दो में दूध भरवे के बर्तन जैसा बना लो। बीच में शंकर पार्वती जी बैठा लो। चौखटा के बाहर ओडरिया पडरिया बना के उमे सात ठइंया सांप बना लो। सब चीज गैया के गोबर से बनात हैं पर आजकल शहरन में गोबर नइ मिलै तौ आय में हल्दी डाल के माड के उसे सब बना लेत हैं पूजा के बाद दूसरे दिन सब सिरावे में डाल देत हैं। और अब दरबाजे के बाहर एक पेपर में हल्दी या रोरी से पुतरिया बना के दीवाल में चिपका लो, काये से कि ओइमें घी गुड से आस जोस जोरी जात है उतई नीचे एक दिया में राई नोने मिर्चा और मिल जाएं तो भटकटैया रख लो पास मूसल होय तो ठीक है नई तो कौउ मोटी सी लकडी डंडा टीक के रख लो।

पूजा की थाली-हल्दी रोरी चांउर, फूल कच्चोदूध, आरती, रूई, आस जोस बना के, कछु मीठो भोग खों, होरी की दोज में गुलाल और दीवारी की दोज

में धान की लाई बताशा रख लो। थोडी सी अठवाई कोरा देवे रख लो फिर कहानी कहो।

पहली कहानी–ऐसे ऐसे एक साधारण परवार के मताई बेटा रहे। एक बखत लडका अपने दोस्तन के साथ खेल रहो थो तो देखों कि सब लडका टीका लगाएं हैं उने पूछी जो तुमौरे काय को टीका लगायें हों, उनोरन ने बताई कि आज भैया दोज है तो हमायी बहन ने लगाओं है। तो वो घर आओ मताई से पूछन लगों, हमायी बहनें नइया का, हमें भी टीका लगवाउने थो, मताई ने कही कोउ के एक दो बहन होती हैं तुमायी तो सात सात बहनें हैं बेटा गरीबी के पीछे नइ बुलात हैं। लडका रहो जिह्दी कहन लगों अब तो टीका लगवाइके खा हैं। मताई से कही बेटा एक बहन तो पासइ गांव में है, पर फाग दीवारी की दोज बिना खाए नइ चलने पडत, बो न मानो। तो उनने कही ठीक है अच्छे से जइयो।

अब लडका घर से चलो तो नदिया बहाये ले जाये तो उने कही बहन से टीका लगवा आएं फिर बहइयों। आगे चलो तो महल गिरो जाय कही बहन से टीका लगवा आएं फिर गिरिओ। आगे चलो तो शेर खावे खौ दौडो उने कही बहन से टीका लगवा आंए तब खइयो।

अब वो बहन के घर पहुंचों, बहन खौ बुलाओं तो बहन आसजोस जोरत ती, तौ न बोली, लडका ने सोची इतनी दूर से आए बहन बोलतइ नइया, लौटन लगो तब तक बहन की पूरी पूजा हो गयी, बुलाओं भैया आ गओ। बहन खुंशी के मारे पागल सी हो गयी, मुहल्ला में गयी तो सबसे पूछै सात बहनन को प्यारो भैया आओ है, उखौ का बनाय खवांय कोई खौ मजाक सूझी, तो कही दूध में पुडी और घी में चांवल बना लो उने वैसो करौ तो दूध में पुडी फरा सी निकर आयी और चांवर घी में चटरपटर होंय, तो फिर से ब उनके पास गयी कि कैसो बताओं बनतइ नइया। तौ बे बोंली ज कैसी बावरी हो गई अरी जा, तो घी में पुडी सेंक ले, दूध में चांवल डाल के खीर बना के भैया खौ जिमा ले। फिर बहन ने ऐसइ करो भैया खौ टीका लगाओ, तो उने कही अब हम जेहैं, बहन ने रोको नइ मानो तो उने सोची

पुडी बना के रख दें साथ में। आटा नइ थो तो बिना चकिया झराये, जल्दी गेहूँ पीस लए और पुडी बना के भैया खौ दे दई वो चलो गओ, इके बाद उने आखिरी पुडी कुत्ता खौ डाली तो एंडयामुरया के खतम हो गओ भीतर जा के देखी बाकी पुडी हरी हो गयीं चकिया के पास के अच्छे से देखो तो सांप की कांचरी भी पिस गई थी।

अब जोन रस्ता से भैया आओ थो, बहन दौडी गयी, भैया एक पेड़ के नीचे सो रहो थो डर गई बोली भैया भैया बे पुडी तो तुमने नइ खायी। भैया बोलो तुमायी पुडी में जान रखी का, बे टंगी पेड़ में पुडी। बहन बोली भैया ऐसो नइया, देखो पुडी में जहर है ईसेआ कही। भैया बोलो तुम हमें कहां तक बचैहो, हमायी तो जगह जगह मौत है सब बताओ, तो प्यार से घर लिवा लायी बहन ने सास से पूछी का करौ जाय, उनने कही तुम साथ में चली जाओं शेर खावे आय तो जौ को पूरा डाल दइयो, कहियो आप भैया देत हो लेत नइयां।

आगे महल गिरौ जाये। तो सोने की ईंट ले जाओ जहां संध दिखै लगा दइयो आगे निकल जइयो। आगे जहां नदिया बहांय ले जाय तो लहंगा नुगरो ओढा दइयो कहियों हाथ जोड के, कि माता भइया देती हो लेती नइहो और आगे चल दइयो।

अब बहन ने घर से सब चीज ले लई और जैसी जैसी सास ने बताई, वैसइ सब करके आगे चले तो एक मंदिर में भैया अराम करन लगों बहन पास मैं पंखा डुलात रही भैया खौ प्यार से देखत रही। इतने में कंहू से खटखट की आवाज आ रही थी तो लडका खौ लेके गई उतै पूछी कि भैया ज काये की आवाज है तो बतायी कि गांव में सात बहनन को प्यारो भैया है उको ब्याव होने वालो है भर भांवर में मौत है जो कोइ जानत हूहै तो जे जम्पांचे के कांटे पीस के दे देहै तो बो अच्छों हो जैहै। बहन सोचन लगी।

ज तौ हमाये घर की बात आय। उने लडका को चौंटिया काटी तो बो रोन लगों, उनने कही जो काये आ रोत है, कही जेइ कांटे तो आ

मांगत, है बोलो अरे का करहै बो, बहन ने कही अरे दे दो ना। उने दे दए, जैसइ दये जल्दी छोर में बांधे भैया के पास आई, सोचन लगी भैया को ब्याव पास में है, पहले जमाने में बरात में औरते नइ जाती रहीं तो का करै पागल बन गई भाई को लात मार के उठाओ कही कब लौ सोहे घर चल।

अब भैया बहन घर आ गये लडका ने मताई से कही रस्ताभर बहन ने जान बचाई, मंदिर, में जाने का हो गओं, थोडेइ दिन में ब्याव के नेग चार चालू हो गये तो हर नेग पहले करवात रही, नइ तो हम भैया खौ गाली देहैं तो सब कोई औइ के मन से सब करैं, बरात जावे की बेरा भई तो कहै हम भी जैहे, उतै बरात में घोडा पे लडका बैठों तो कहै हम भी बैठें सब देख देख के हंसे कि पागल बहन आयी है घोडा पे बैठी है फिर इतै भी सब नेग आगे कराये, अब जब भांवर की बेरा आयी तो बहन जान बूझ के सो गई कि हमें थोडी भांवर पडवाने है और अवै देर है।

इते सबने सोची बहन सो गई तो जल्दी भांवर पडवा दो जैसइ सात भांवर पडी लडका मूर्छा खा के गिर गओ रोना पिटना मच गओ, कहैं ज बहन खूब गाली देतती ई से ऐसो हो गओ, कोई कोई ने कही बहन आय बता दो, जैसइ बताइ तो बहन उठ के बैठ गई उतइ सिल लोढा मंगाओ, जम्पांचे के कांटे निकाले औ पीस के भैया खौ जबरदस्ती पिवा दओ। तो भैया उठ के बैठ गओ, बौलो बड़ी नींद लगी थी।

अब सब कोई कहे बहन बहुत अच्छी है, भैया की जान बचाई, जैसो कहत जाय करत जाओ उतै घर में खबर पहुंच गई सब रोन गान लगे। इतै बहन के कहे से जल्दी बिदा भई बरात वापस लौटी बहन आगे आगे गई कही दरबाजा खोलो मताई ने कही खूब गाली देत रही भैया खौ चाट आयी। बहन बोली देखो तौ हमाओ भैया उबो दूबो भौजाइ खौ लेके चलो आत है। सबने देखो, खुशी से सब नेग होन लगे। अब सुहागरात में भी बहन कहै हम भीतर भैया के पास सोहैं। तो कोई कोई ने कही सो जान दो कछु नइ होय एक तरफ बहन, एक भौजाइ चुपचाप सो गये। बहन खौ तो नींद नइ आ रही थी आधी रात खौ भौजाई के मुंह से नागिन निकरी तौ भैया खौं

डसे ले बहन ने भैया की कटार निकार के नागिन खौं मार के कूडें के नीचे दबा दई, फिर भैया खौ उठाओ कही हम बाहर जात है। तुमौरे आपस में बात करों।

अब बाहर आके ढुलकिया बजा के भैया भौजाई खौ खूब आशीषें गान लगी। मताई सबेरे उठी तो लडका से कही बेटा इने बहुतइ परेशान कर डालो, अब जाओ बजार तो छै ठइयां लहरपटोरे एक ठइयां छीट छिमरिया ले आओ, ईकी बिदा कर दें। भैया बजार गओ तो आके मताई से कही माताराम पूरे बजार में एक लहर पटोरो और छै ठइयां छीट छिमरिया मिल रइ है। बहन ने सुन लइ तौ मताई से कही न हमें तुमाओ लहरपटोरो चहिए न छीटछिमरिया। **हमने तुमाओ पूत राखो भौजाइ को ऐवात और अपनो वीर राखो।** अगर हम पागल न बनते तो हमें बरात में जावे न मिलतो भैया की कैसे जान बचाते और सुहागरात में कैसे कमरा में सोते, कैसे नागिन खौ मारके कूडें के नीचे दबाते, विश्वास न हो तो देख लो।

सबने उतै जा के देखो, तो खूब सराहो, औ कही भगवान बहन होय तो ऐसी। अपने भैया की जगहा जगहा जान बचाई। तबइ से मढवा के नीचे सिल लोढहा रखो जान लगो और दोज में आस जोस जोर के और दिया मे ंराइ नोन के साथ कुचर के अपने भैया की बहनें खुशी मनाती हैं

जय भगवान की।

---oo---

दोज की दूसरी कहानी

ऐसे ऐसे भाई बहन रहे और उनकी सौतेली मताई रही। दोनों के ब्याव हो गये थे। बहन पासइ गांव में थी, गांव के बाहर एक ओडरिया पडरिया थी उमै भाई की जान थी तौ बहन उ गांव में दूध दही बेचवे वाली ग्वालन से पूछत रहत थी कि ब ओडरिया पडरिया साफ पडी है सब बता तो दें पर हंसे कि कोई अपने मायके की राजी खुशी पूछत है ज देखो तो एइ पूछत है।

इतै सौतेली मताई लडका खौ मारवे के पीछे पडी रेहेतती कहूँ जूता में बिच्छू डरवा दे, कहूं अरगनी में सांप लटकवा दे, कहूं खावे में जहर दै दे पर बो लडका न मरै, तो उकी घरवाली सीधी सादी, थोडी जकलू सी रही। सास बार बार कहे अपने उनसे पूछियो कि उनकी जान काये में है ब भूल जाये तो साडी के पल्ला में गांठ बांध दई। रात के कमरा में लडका ने पूछी की ज गांठ कैसी आ बांधे हों।

तो बोली अरे हॉ याद आयी ज तौ बताओ, तुमाई जान काय में है उनै न बतायी तो जिद् पकड लई, नइ पहले हमें बताव नइ तौ हम बात न करहैं। तौ लडका में बता दई बहू ने सबेरे सास खौ बताई कि बाहर गांव औडरिया पडरिया में है। तो इ बार फाग दीवारी खों सब कचरा उमें डाल के आग लगवा दई, ब धांय धांय जलन लगी।उ गांव की ग्वालनन ने देखों कि आग लगी है बोली कछु तो बात है वे दौडी दौडी गई, बहन से कही बाई आज ब ओडरिया पडरिया में आग लगी है बा बोली जल्दी सब कोई चलों अपनो दूध दही उमे। सींच दो हम मुंह मॉगे पैसा देहैं। सबने सींच के आग बुझा दई।

फिर बहन भैया के पास गई देखो बो बेहोश सो हो गओ थो अब धीरे धीरे ठीक हो रओ थो। तौ कही हमने तो कही थी सौतेली मताई मारवे खौ फिरत है तो अपनी जान न बतइयो। तुमने बता दई तो उने आगी लगवा दइ फिर मताई खौ चुनवा दऔ गओ।

अब भैया भौजाई और बहन सब खुशी से रहन लगे। जब कहानी में आग बुझावें की बात निकलत है तौ उ समय दूध ओडरिया पडरिया में डालों जात हैं। फिर पूरी पूजा करके कोरा देत हैं। बहने अपने भैयन खौ टीका लगा के मीठा खबातीं हैं।

---oo---

शीतलाष्टमी (बासेरा)

शीतला महारानी खों जूडो सीरो अच्छो लगत।
भक्त जन सब ठंडो खा के मां के गुनगान करत।।
जो कोई मइया की प्रेम भाव से सेवा पूजा करत।
खुश हो के माता उनोरन की सबरी पीरा हरत।।

इमें होरी जरवे के बाद एक हप्ता के अंदर शीतला माता की पूजा करके बासेरो मनाव जात है।

एक दिन पूर्व-दिन में चौका साफ करके साजे या कोरे कपडा पहनके जल भर के रख लो, फिर संजा के देवीजी खौ चढावे थोडी सी अठवाइ सेंक लो, ओइमें दूसरे दिन दोनों जून खावे खों पुडी सेंक लो, फिर कढी, भात, कुहरी पानी के फरा बना लो, जो मन में होय तो साग बना के रख लो। दूसरे दिन महरानिन की पूजा के लाने आजइ दही भटा, नौनिया की भाजी मंगा लो।

बसेरे के दिन पूजा की थाली-संगों लो उमें हल्दी रोरी चांवर, फूल, अठवाई बताशा, घी गुड, काली पीली सात ठइयां चिन्धी, तेलबाती डाल के दिया, होरी के दिन की बल्लन की माला, पैसा सुपारी, भटा, भाजी, दहीभात कुंहरी फरा ठंडो ठंडो देवी जी खों चढवे रख लो।

मंदिर जाके पूजा करके एक तरफ पानी से गोल लीप के बिना जलोदिया रख के, सब पूजा की चीज चढा के कथा कह लो और अपने जेठे सयाने जोन नइयां उनके नाम को भी चढा दो और आंचरके छोर के नीचे दोनों हाथ से बरा जैसे पै लो और बार तोड के केहत जाओ **टूटे बार बढे परिवार** उतइ कहानी भी कह के एक दूसरे को टीका लगा के पूजा पूरी करौ।

बासेरे की पहली कहानी-ऐसे ऐसे एक गांव में सेठ साहूकार थे उनके सात लडका सात बहू थी। छोटी बहू बड़ी खब्बू रही, सब चीज जुठार देतती। उके मारे सेठ सिठानी खौ कौनउ पूजा रचा करवो बड़ों कठन थे पर एक बखत

उनने घर में सत्नारायण भगवान की कथा पसारी। सबली बहुअन खों एक एक काम दे दओ, छोटी बहू से कही बाहर जोन कुआं है उतै से पानी लाके भरिया, सोची जब तक पूजा हो जे है। सब अपने अपने कामन में लग गई।

छोटी बहू खों अब चैन न पडी उनै सोची ज पूजा तौ कजाने कब तक हूहै फिर पानी भरत भरत उनै जिठानी की नजर बचा के एक आटा क लुंदिया अपनी गुंड मे डाल लई औ कुआं के पाट पै ले गयी अब महरानी की मढिया गई तो नारियल के जटा उठा लायी, जला के उमें आटा की गकरियां सैंक लई फिर सोची खाएं काय के साथ। इत्ते में याद आयी कि आज बासेरो है देवी जी के मुंह में धी गुडं लगो हूहै, तो गई औ मुंह को घी गुड छुडा के ले आयी। अब कुआं के पॉट पै बैठ के उकै साथ गकरिया खाई और फिर पानी भरन लगी।

इतै जब तक सास ससुर की पूजा हो गयी बे उठीं तो कहन लगीं आज तो बड़ों गजब हो गओ, छोटी बहू ने कछु जूठो भी नइ करौ और भूखी भी है अबै तक। उन्हें दया आ गई कही सबसे पहले ओइखौ खवाओ फिर फिर सबने खाओ पियो। संजा भई तो गांव में हल्ला मचो कि देवी ने मुंह में उगरिया लगा लई, खूब भक्तें भई सब देवी खौ मनावे पहुंचे। सास ने छोटी बहू से भी कही तुम काये नइ जातीं मनावे, ब कहन लगी हमें का करने। सास ने कही जाओ तौ मनावे।

अब गई मढिया तै सबसे कही सब बाहर निकरौ, इन्हें हम मनात हैं, फिर किवार अंदर से बंद करके देवीजी से कहीं हमने अपने सास ससुर की कनक लई, गांव वालन को घी गुंड छुटा के लै गये। तुमने मुंह में उगरिया का ये डाली, निकारों जल्दी, नइ तौ हम और खराब दशा करवी तौ देवी जी ने उंगरिया निकाल लइ कि ऐसे खराब सोच वालन खों न हम अच्छफल देहैं न इनकी कौन कौन बात में रेहैं जो कोउ जैसे करम करैं वैसों फल पाहैं। जिनने बासेरे में ठंडों चढाओं, उनके उपर शीतला माता की खूब कृपा होत है। जै हो माता।।

दूसरी कहानी– ऐसे ऐसे एक देवरानी जिठानी रहीं। एक बखत देवरानी के लडका खों माता निकर आयीं, तो सास रोज माता से विनती करै, जब ठीक हो गई तो माता पूजवे गई बहू से कह गई कछु गरम न बनइया, देवी पूजीं पानी उतरो, अच्छी हो गयी। अब जिठानी के लडका खौ माता निकरी तो सास ने फिर बैसेइ माता से विनती करी ठीक हो गई तो बड़ी बहू से कही हम माता पूजवे जा रहे हैं करहैया न चढइयो, कछू गरम न बनइयो, खइयो।

वे चलीं गई तो उने सोची कौन हमें सास देखवे आरईं। जल्दी करहैया चढाई गरम गरम पूडी बना खा लई। सास घर आईं तो संजा तक और बड़ी माता निकर आई। तौं जिठानी सास से कहन लगी देवरानी के लडका की तौ अच्छे से पूजी, हमायीं बुरे मन से पूजा ई से ऐसों हो गऔ। सास ने कही बेटा हमें तौ सब नाती बराबर हैं हमने तौ अच्छे से पूजीं फिर से मंदिर गईं देवी जी की शरण पडीं, माता सिरै आ गई बोली अपनी बहू से पूछो जब तक तुम इतै आई उनै गरम गरम बनाऔ खाओ, सास ने माफी मांगी क्षमा करो महारानी, बे प्रसन्न हो गयीं।

फिर घर जाके बहू से कही तुम भी माफी मांगों, उनै भी क्षमा मांगी तौ माता ठीक हो गईं। शीतला माता खौ ठण्डो चढा के ठण्डोई खाके रहत हैं तो महारानी प्रसन्न होती है।

जय माता की।

गणगौर

सब सोला सिंगार कर पूजतीं हैं गनगौर,
अमर सुहाग देतीं माता पार्वती सिरमौर।
आज के रोज गौरीशंकर आये नंदीसवार,
कई तरां पकवान बना प्रसन्न करे सब नार।

जो त्यौहार नौ दुर्गा की तीज खौ मनांव जात है। सब सुहागिलें सोला सिंगार करके शंकर पार्वती जी की पूजा करती हैं

पूजा की विधि विधान-ज पूजा में मिट्टी के शंकर पार्वती जी बना के इनकी पूजा होत है। वैसे तो आजकल जो घर में शंकर पार्वती हैं उनई की पूजा कर लेतीं हैं। भगवान के पास जहां पूजा करने होय पांच खूंट को लीप के चौक पूर के उपर पटा रख के शंकर पार्वती खौ बैठात हैं।

पूजा की थाली-जल, हल्दी, रोरी, चांवर, फूल बेलपत्री दूबा, टिसुआ के फूल, आरती, अगरबत्ती, पार्वती जी खौ चढावे फरिया , सिंगार के सामान ; चूडी, बिन्दी, महावर, द्ध बेसन के गहने सिन्दूर, शंकर जी के लाने कच्चेसूत, जनेउ, पैसा सुपारी, प्रसाद चढावे, बेसन, मैदा, गुड की सादी पपडिया, गनगौरा पहले से बना के रख लो, फिर सब पूजा करके कथा कहो।

पहली कथा-ऐसे ऐसे एक राजा रानी थे इनके कोई संतान न थी। कोई भी साधु महाराज आएं तो कहें हम निपुत्री के हाथ की मिक्षा न लेहें तो राजा खौ बहुत बुरौ लगो रानी के पास आए, कहन लगे हमाये कोई संतान नइया, हम राजपाट दौड के जंगल में रैहैं रानी ने खूब समझाओ, वे ना माने, तो रानी ने दासी से सलाह लई, उनै कही राजा में झूठइ कह दो कि हम गर्भवती हैं, फिर आगे सोचें अवै तो जावे में बचे। उनने वैसे कह दई, राजा

बहुत खुश भए बौले अब हमें कहुं नइ जाने। पर रानी ने कही एक शर्त है हम नौ महिना दूसरे महल में रेहैं, राजा बोले कोई बात नइ।

अब रानी और दासी ने बड़े सोच विचार के एक मैना ले लई, उखो सिखान पढान लगीं। नौ महिना बाद दासी ने राजा से कह दई आपके कन्या भई है, राजा बड़ें खुश, कि हम निपुत्री तौ नइया। गांव भर में खूब खुशाी मनाइ फिर दासी से कही हमें कन्या देखने है तो दासी ने कही अबै हम महाराज से पूछ के आये हैं, उनने बतायी है कि बिटिया के ऐसे ग्रहा पडे है कि आप १६ साल में मतलब ब्याव की बखत उखौ देख सकत हो नइ तो बिटिया न बचहै, तो राजा एकदम रह गये। इतै रानी दासी मैना खौ एक बच्चा की उमर के अनुसार रोवे हंसवो बोलवो सब सिखान लगीं और जैसे जैसे बिटिया बढत जाती हैं ओइ के हिसाब रोज तरह तरह के कपडा बाहर धोएं बगरायें। उमर के अनुसार मैना पर्दा की आड में राजा से खूब बातें करें। राजा मीठी बोली सुन के बहुत खुश होएं। ऐसइ रेहेत रहेत १६ साल की हो गई तो कही वर देखो।

सब में बात फैला दई कि कन्या बहुत सुंदर और होश्यार है फिर उके अनुसार एक राजकुमार से शादी पक्की करी, ब्याव होन लगो राजा ने फिर कही कन्या को देखने है तो दासी ने कही सासरे से आ जाये तब देखियों। ब्याव भओ तो कही हमाय इतै कटार से भांवर पडत है जब बिदा को समय आऔ तो अकेले में राजकुमार खौ बुलाके रानी औ दासी उनके पांव पै गिरीं। और सब सच्ची बात बता दई कि राजा घर से निकरे जात्ते, ई से हमौरन ने ऐसो करो है हमाए पास ज मैना है बहुत समझदार है, हमायी कन्या नई है हमायी लाज रख लो, रोन लगीं तो राजकुमार एकदम सन्न रह गये कि जो का भओ। पर उन्हें रानी पै दया आ गइ, मैना खौ पर्दा की आड से बिदा कराके पालकी में ले गये, कहार सोचे कितनी हल्की बहू है। अब राजकुमार अपने गांव पहुंचे तो सबको कह दई बहू खौ कोई न

देखे अलग महल में पालकी उतर के रहन लगे, मैना की मीठी बातन में वे खिच गये।

दूसरे महल में उनकी पांच भाभी थी पहले जे अपनी भावियन के खाना में रोजइ नुक्स निकालत्ते कि जो रोनो, जो खारो जो खट्टों है बगैरा बगैरा। पर अब चुप चाप खा के आ जाये सबई भाभी कहे अपनी राजपरी तो नई दिखाई पर इनकों स्वभाव तो अच्छो हो गओ। थोडे दिन बाद सातवे कुंअर को ब्याव आऔ तो सब भौजाइन पें काम ज्यादा पडो तो इन्हें ताना मारन लगीं कि अपनी परीरानी खौ तो बेठा लओ हमौरे सब काम करें, इतने बड़े महल की पुताई होने है। जे राजकुमार चुपचाप सुन के आ गये, उदास पर रहे। मैना पास आयी बोली का बात है आप उदास काये हौ बोले तुमें का बातांय, तुम तौ हमाय गले से बंधी हो, हम कछु कहइ नइ सके। मैना बोली बताओ तौ, बोले पूरो महल पूतवे डरो है तो भाभी हमें ताना मारती है। मैना बोली आप दुखी न हो, उन से कह दो, महल खाली कर दें, जोन कमरा में जोन रंग होने होय, घोर के रख दें, हम रात के आकें पोत दे हें आप हमाय उपर विश्वास करौ, उनने जाके वैसेइ कह दई। मैना रात के जंगल से अपनी खूब सारी सखियन खों लिवा लाई, एक पंख रंग में डारे और दीवार में छपका मार दें। ऐसेई बार बार करे सबेरे होवे से पहले पोत के वापस आ गई। सबरे उठके इतनों सुंदर कलाकारी को पोतवो न देखो थो तो बड़े खुश भया कि एकई रात में इतनों अच्छो महल पुतो।

चार छै दिन बाद फिर कहन लगीं राजकुमार से, महल पोते भर से का होत है, इतने सारे बोरन के चांवल कुटने है अब की बार भी राजकुमार चुपचाप आ गये और मैना के पूछवे पै बोले तुमने पंखन से पुताई तो कर दई पर अब चांवर कुटवे रखे हैं। मैना ने कही उनसे कह दो, बीच आंगन में बोरा से उडेलके ढेर लगा दो हम कूट देहैं। राजकुमार ने जाके कह दइ। रात के मैना फिर सब सखियन खों बुला के ले आई चोच में दाना ले के एक तरफ चावर की फुकली को ढेर लगा दओ। सबेरे सबने देखो तौ रह

गई कि बिना उखरी मूसल के, बिना कनकी टूटे सेंगे चांवल निकाल के रख दये अब तो राजकुमार से औ सबसे बड़ी तारीफ करी कि इतनो अच्छो काम तो करौ, गजब हो गओ।

थोडे दिन बाद छोटे राजकुमार की बारात जान लगी तो जे राजकुमार उदास हो गये कि अब हम का करैं हमायी पोल खुल जैहे। मैना खौ दूर भी नइ कर सकत थे उकी बातन से उखो बहुत चाहन लगे थे मैना उन्हें समझओ कि आप पूरे महल में गुलाल बिछा दो, पिंजरा में चार दिन को अनाज, डबुलियन में पानी भर जाओ और चले जाओ, उन्ने वैसे करो।

अब जी दिन शादी थी, मैना खुशी के मारे खूब नाची तो पानी गिर गओ, फिर जब उखौ प्यास लगी तो डबुलिया को धागा गले में फंसा के नदिया गई पानी पियो अब भरी डबुलिया के वजन से डूबन लगी और खाली कैसे लाएं फिर से प्यास लगहै ऐसो तमाशा गनगौर के दिन जात भये शंकर पार्वती जी ने देखो, तो पार्वती जी ने शंकर जी से कही ज मैना कितनी होश्यार है आप इखो नारी के रूप दे दो, शंकर जी बोले भई औरतन खौ तो बड़ी जल्दी दया आ जात है अरे अपने अपने कर्म से योनि मिलती हैं बे न मानी तौ उनने मैना खौ नारी बना दओ उनै भगवान की स्तुति करके कही हमायी पीठ में थोडी से पंख रेहेन दो, सबखौ विश्वास करावे।

फिर मैना घर आयीं तालो खोलो, पलंग में जाके लेट गयीं, इतने में राजकुमार बरात से आए देखो गुलाल में पैर के निशान, पिंजरा खाली और कोई औरत लेटी है उनने सोचो हमाओ राज खुल गओ अपनी कटार निकाल के अपने खौ मारन लगे तब मैना ने उठ हाथ पकड लओ कही पहले अपनी कहौ हमायी सुनो। हमई आप की मैना हैं पीठ के पंख दिखाये शंकर पार्वती जी की बात बतायी, अब तो राजकुमार बहुतई खुश भय। जल्दी जाके भामी हरन से कही पहले हमाओ मोचाएनो हूहै फिर छोटे कुमार को। तौ सब खौ इनको देखवे की ज्यादा उत्सुकता रही कि जोन ने इतने अच्छे काम करे है

और कबहुं देखो नइया। जब देखो तो सब देखतइ रह गये रूप। कि इतनों सुंदर, भगवान ने अपने हाथ से तौ आ बनाओ थो।

अब राजकुमार ने मैना के मायके राजा खौ खबर भेजी, अपनी बिटिया खौ ले जाओ। राजा तौ देखवे बैचेन रहेई, तुरतइ आ गये, देख के रह गये हमायी बिटिया इतनी सुंदर। जीखौ कबहुं न देख पाए थे। फिर उखौ लैके अपने नगर महल आए रानी दासी ओंधे मुंह पडी कि अब पोलखुल गई राजा हमौरन खौ फांसी देहैं, पर बिटिया खौ देखो तो सोची राजकुमार समझदार हैं दूसरो ब्याव करके उखौ भेज दओ। पर मैना ने अपने पंख दिखाके सब बात बतायी, कि गणगौर के दिन शंकर पार्वती जी ने प्रसन्न हो के जो रूप दओ।

तब से ज गनगौर की पूजा करके पटा के सामने थाली में पानी रख के टेसू फूल से रंग बना के उमै भगवान की परछाई देखी जात है सबके उपर बोइ जल छिडकत हैं। पार्वती जी खौ सिन्दूर चढा के सुहाग लेत हैं। सब खौ टीका लगा के कोरा देत हैं।

गनगौर की दूसरी कथा

एक बखत शंकर पार्वती जी हिमालय में बैठे रहे। पार्वती जी बोली दृ महाराज हम पानी पी के आ रहे हैं, गई तालाब में, पहली बार चुल्लु में पानी लओ तो फूल दूब आ गयी दुबारा लओ तो बेलपत्री, पूजा सामग्री आ गई तो लौट के शंकर जी के पास आयीं, केहेन लगी महाराज हम पानी नइ पी पा रये। उनने कही पार्वती याद करो कोई पूजा रचा तौ नइया आज। फिर ध्यान करो बोली दृ महाराज आज गनगौर है चलो पृथ्वी लोक चलें।

अब नंदी पै सवार हो के शंकर पार्वती जी चले तौ रस्ता में जोन देखें, कहें बताऔ तो बेचारे नंदी के उपर दो दृ दो जनें बैठे हैं उकी का हालत हूहै। तो वे उतर गये, नंदी के साथ पैदल चलन गये, तो लोग कहें देखो तो नंदी साथ लैं हैं तो भी पैदल जा रए। शंकर जी बोले पार्वती तुम बैठ जाऔ नंदी पै, बे बैठ गई तो लोग कहें जो बूढो आदमी पैदल चल रओ है अपन जवान नंदी पै बैठी है। पार्वती जी उतर गई शंकर जी से कही आप बैठ जाओ, बे बैठ गये। अब लोग कहें जो आदमी तो देखो नंदी पै बैठो है बगल में सुकुमारी पैदल चल रही है। तो शंकर जी बोले पार्वती जो मृत्युलोक आय इतै कोई कैसे भी, कुछ भी करै सब में नाम रखत हैं छोडो इन बातन खौ।

अब उतइ एक आम के पेड़ के नीचे शंकर पार्वती जी बैठ गये, थोडी देर में पूरी जगहा खबर फैल गई कि आज गनगौर में साक्षात शंकर पार्वती जी आके बैठे है तो जितनी नीची जात की औरते रहीं वे लोटा में जल और हरदी रोरी चांवर लेके पूजा करवे आ गई पार्वती जी ने सब सुहाग उनपे छिडक दओ, तो शंकार जी बोले पर्वती तुमने जो का करो अवै तो उंची जात की कोई नइ आयीं बे देखो सज-धज के खूब तरह-तरह के पकवान बना के गाजे बाजे के साथ पूजा करवे आ रहीं हैं इन्हें कैसे सुहाग दे हौ तो पार्वती जी ने अपनी बाई हाथ की छिगरी चीरी और उकों रक्त

सबके उपर डार दओ जिनके उपर पड गओ उनको सुहाग अमर हो गओ जिनके उपर नहीं पडो उनको बिगर जात है।

इके बाद शंकर पार्वती जी के सामने थाली में टेसू के फूल के पानी में सिन्दूर घोर के रखो रहत है वो सब कहानी सुनवे वाली सुहागन को छिडक देत हैं कि महारानी आप को जो सुहाग सबके उपर पडे सब सुहागिन रहे फिर देवी जी खौ सिन्दूर चढाके सब कोई लेतीं हैं। थाली के जल में भगवान की परछाई देख के टीका रोरा करके कोरा लेती है पूरी पूजा कर के भोजन करतीं हैं। शाम खौं जोन मिट्टी के शंकर पार्वती जी जिनकी पूजा करी उन्हें आम के पेड़ के नीचे बैठा देतीं हैं।

जय हो गनगौर में पार्वती जी सबको सुहाग अमर रखें।

---oo---

पिपरदशा

दिन फिरे नल दमयन्ती के, पिपरदशा उपास।
सब पीपल की पूजा करो, ईमें प्रभु को वास।।

जो त्यौहार चैत के महिना में रामनवमी के दूसरे दिन होत है इमें पीपल की पूजा करी जात है सब दिन सुखशांति और दिनदशा अच्छे रहें प्रभु से मनात हैं।

पूजा विधि-आज के दिन सबेरे जल्दी नहा के आटा माड के उसै पेड़ बना के उमै दस ठौ आटा की गोली बनाके चिपकात हैं दस गोल छोटी टिकडी सी बनालो दस ठो लंबे से फरा बना लो। पूजा की थाली में हरदी रोरी चांवल जल फूल आरती अगरबत्ती, पेड़ में लपेटवे कच्चो सूत, एक डबुलिया में चिरोंजी शक्कर, एक डबुलिया में चना की दाल, पैसा सुपारी सब रख के पीपल के पेड़ की पूजा करत हैं। फिर कथा कहो।

कहानी-ऐसे-ऐसे राजा नल औ रानी दमयन्ती थीं रानी पिपरदशा उपासी रहतीं थीं उनने राजा से कही आज के दिन भिक्षा नइ दई जाय। आज हम पानी के सिके दस फरा घी गुड के साथ और चांवल आलू की सब्जी दही जोई खाहें। राजा बोले तुमौरन की रोजइ कछुं कछुं बात रहत हैं हम तो जेंई फरा दान करहें रानी ने सोची राजा हैं जिद्दी, कहू सही में न फरा मिक्षा में दे दें उनने फरा महल से खपरा वाले कोठा में उठा के अलग रख दये। राजा ने देख लए उनने बांस से खपरा हटा के फरा छेद के उपर निकाल लए और कोई खौ भिक्षा में दये।

जब रानी पान्ने करवे बैंठी देखे तो फरा नइ। समझ गईं राजा ने दे दए कोई खौ। थोडेइ दिन में कोई राजा ने चढाई करके उनको राजपाट ले लओ अब राजा रानी जंगल तरफ चले भटकत दृ भटकत भूख प्यास लगी तो सोची इतै कितनी गइयां हैं दुहके दूध पी लें दुहन लगे तो दूध के बदले

खून हो गओ छोड के आगे गये। चना के खेत में पहुंचे पर जो का भओ दांत हो गये मेन के चना हो गये लोहे के तो नइ खा पाए और आगे चले कुम्हडा के खेत में तो बे हो गये कठवा के, भूख के मारे बेहाल राजा रानी देखो सामने कई चिडियां दाना चुग रहीं है राजा ने अपनी आधी धोती फाडके चिडियन पै औढा दई पर जो अंधेर भओ कि चिडियां धोती उडा के ले गई दूर फिर दिखी नइ।

अब और आगे चले एक तालाब मिलो, दोनों ने पानी पियो राजा बोले तालाब की हम मछलिया निकाले देत हैं और थोडी हम आत हैं तुम तब तक भूंज के रखियो, बोली हओ, राजा चले गये रानी की भुंजी मछलियां उचट दृ उचट के तालाब में चली गयीं पर दिन दशा अच्छे नइ थे तो **राजा नल दुःख में परी, भुंजी मछली दुह में परी** राजा आये बोले खावे देओ रानी ने सोची जे विश्वास न कर हें तो कह दई हमें जोर से भूख लगी थी तो हमने खालई राजा बोले चलो कोई बात नइ, एक जन की भूख मिटी अब आगे चले तो बोले हमायी बहन को गांव आ गओ।

कोई से खबर भेजी कि बता दो उनसे भैया भाभी आए हैं तो उतै बहन की सास बोली कैसे आए बोले चीथरा लटकत कूकरा भोकत, तो कहन लगीं कि सामने कुम्हार को अवा लगत है उतै उनको डेरा दे दो। बहन से कह दई जाऔ उतइ खाना दे आओ बहन खौ बड़ो दुख भओ पर कछु बोल नइ सकी चुपचाप थाली के नीचे पनवारे में सोना चांदी हीरा मोती रखके उपर से खावे को सामान रख के भैया भाभी के पास गई कही खा लो भैया, भाभी बोली रख दो बाद में खा लेहें, बहन के जावे के बाद खोल के देखो तो जूठनमीठन रखो, नीचे है तो ककर पथरा। राजा से बोली जो खांये का, उतइ गड्ढा खोद के गडा दओ, अब आगे चले।

राजा के मित्र के नगरी आई उनने खबर भेजी बता दो नल आए हैं बोले कैसे आए कही चीथरा लटकत कूकरा भोंकत, पर वे बोले मित्र तो मित्रइ है कैसी भी हालत में हो, महल में डेरा दो, फिर उनसे मिल के अच्छे

भोजन कराये। रात के राजारानी उतइ सोए तो देखो उनोरन ने, काजल की मोर को चित्र बनो थो सामने हीरा को हार टंगो है, जीखौ ब मोर निगल रही है अब अपनो चोरी को नाम लग है। दोनों जन रातइ के महल छोड के दूसरे शहर चले गये।

अब उतै राजा के पास नौकरी मांगी, राजा ने घुडसाल साफ करवे लगा लओ रानी ने उतै की रानी को साजसिंगार करवे कि नौकरी करलयी, ऐसी रहत-रहत १२साल हो गये। दमयन्वती पिपरदशा उपास हर साल करती रहीं। एक बखत उतै की रानी ने दमयन्ती से कही लाओ आज हम तुमायी कंघी कर दें कंघी करत में ध्यान से माथो देखो तो आंसू आ गये दमयंती के उपर आंसू पडे बोली का बात है तो रानी ने कही हमायी बहनौतिया के माथे में भी पदम रहो, पर अब पता नइ हैं बे कहां हैं। तौ उनसे बतायी हमई आपकी दमयन्ती है। बोली दामांद कहां है तो कही जोन घुडसाला साफ करत हैं रानी कहन लगीं पहलेइ बता देतीं कि तुम नलदयन्ती हो हमाए इतै नौकरी काए करी, बोली हमायी दशा अच्छी नइ थी।

फिर घुडसाला से राजा नल खौ भी बुलाके दोनों खौ राजसी कपडा पहनाए और खूब ठाटबाट से हाथी घोडा रथपालकी में खूब सोना चांदी दे के बिदा करी। लौट मित्र के इते आये खाओ पियो फिर साये तो हीरा को हार काजल की मोर उगल रही थी तो उगलत में मित्र को दिखाओ कि देखो हमने हार नइ चुराओ थो, बे बोले हमें तो मालूम थो कि आप ऐसे नइहो, कोइ ग्रहा को कारण आय। फिर उतै से बिदा लेके बहन के घर पहुंचे उनने पूछी कैसे आ रये बताई **लाव लश्गर से गाजे बाजे** से कही महल में डेरा देदो। पर रानी तो पहले को अपमान न भूली थी बोली कुम्हार के इतै रूकहैं। बहन फिर से वैसेइ थाली लगा लायी भैया भाभी खा लो, देखो तो रानी बोली ओइ जूठन मीठन लाओ जोन पहले लायीं थीं। बहन रोन लगी बोली नइ भाभी हम पहले भी ऐसइ लाये थे विश्वास करावे गड्ढा खोद के

देखो हीरा मोती म्झिलिरमिलिर हो रहे थे, तब फिर कही अरे हमाये दिन दशा खराब थे फिर बहन खौ भी बिदा करके साथ लिवा चले।

तालाब के किनारे हाथ मुंह धोवे उतरै तौ बे भूंजी मछलियां उचट-उचट के बाहर आएं राजा बोले जो कैसो है रानी ने बतायी जे भुंजी मछली वापस तालाब में गई आप खौ विश्वास दिलावे एक मछली खौ अपनी कान की बारी पहना दई थी ब देखो उचट के आ रही है। आगे चले तो बे चिडियां धोती ओढे भई सामने बार दृ बार आएं। और आगे आगे कुम्हडा ढडके, हरे दृ हरे चना लहलहाएं, खा के आगे चले,गैया के थन से अपने आप दूध की धारा बह रही, पीके आगे चले तो पूरे राज के लोग अगवानी के लाने आए बोले राजा साब आप कहां गये थे अपनो राजपाट संभालो।

राजा नल दमयन्ती खौ सिंहासन में बैठा के तिलक करो। राजा ने बतायी हमने पिपर दशा की पूजा को अपमान करो ई से इतने खराब दिन दशा देखे अब सब कोई जो व्रत करै ईसे भगवान प्रसन्न हो के अच्छे दिन दशा बनात हैं।

जय हो भगवान भूल चुक माफ

---oo---

जगन्नाथ स्वामी जी

जगन्नाथ के भात खों, जगत पसारै हाथ,
प्रेम भाव से सुमरौ तौ जे सदा हमारे साथ।
चैत के हर सुम्मार खौ, पट बैत तूमा पूजों,
आखिरी में कर भंडारा आस पुरी करी जो।

चैत के महिना में जगन्नाथ जी की पूजा करी जात हे। खासकर जो कोई जगन्नाथपुरी हो आत हैं और उतै से पट, बैंत तूमा (लोटा) ले आत हैं बे पूजा करन लगत हैं। चैत में हर सोमवार खौ इनकी पूजा होत है। चार सोमवार या पांच सोमवार पडें सबमें इनकी पूजा करके आखिरी में भंडारा करके अच्छें से पूजत हैं।

पूजा विधि-ज पूजा में पहले एक कटोरी में थोडी सी चना की दाल भोग के लाने फूलवे रख दो, फिर भगवान के पास चौक पूर के पटा रखके उके उपर जगन्नाथ जी को तूमा रख लो उतइ बेंत खडे कर के रख लो। तूमा में चंदन से जगन्नाथ जी के बलदाउ सुभद्रा कृष्ण जी के मुख बना लो। औ तूमा के अंदर के दूध को शरबत बना के रख लो पटा के पास आम की टेरी डाल के कलश जला लो। पटा में चारों तरफ आम के पत्ता में फूलीदाल बताशा बीच में भी रख लो।

पूजा थाली-हरदी, रोरी, जवा, टेसूफूल, कच्चो सूत, आरती अब कलश और उनके सामने रखे गौर गणेश की पूजा करके, तूमा और बेंत में जगन्नाथ जी को स्वरूप मान के उनकी पूजा कर लो, फिर टिसुआ के फूल जवा हाथ में लेके कहानी कह लो फिर आरती भोग करके जगन्नाथ जी को गीत गा के सब खौ बैत कंधा में, सिर में छुवा के, तूमा को शर्बत और दयोल बताशा भोग में देत हैं। ऐसी पूजा हर सोमवार खौ करके आखिरी में भंडारा करत हैं उमें खाजा, पपडिया मैदा, बेसन, गुड की बना के, इनइ सबके गोलरा

बेलरा, मोटे स्यो बेसन के, मैदा के अटका दूधभात रखवे, घरी पूरी सब बना के भोग लगत है।

कहानी-ऐसे-ऐसे भाट भाटेन थे, भाट रोज सबेरे सोके उठें तो नहा धोके भीख मांगवे चले जाएं, उतै से जोन आटा मिलै तो भाटेन रोटी बनायं और बाहर जाके हाथ धो आएं, भीतर आके देखें तो एक रोटी एक कुचैया बचे ओइ खाके दोनो जन रहे आए।

एक बखत ज्यादा सो आटा मिलो तो भाट कहन लगे गांवइ में बिटिया दामाद हैं उनको न्योतो कर लें। भाटेन ने खूब सारी रोटी बनाई बाहर हाथ धो आयीं भीतर आके देखी तो एक रोटी एक कुचैया बची, बिटिया दामाद जैमे आये तो रोटी दामाद को परस दयी बिटिया खौ कुचैया। फिर बाहर नही निकली तो समझ गये कि अब नइया खावे चुपचाप हाथ धो के चले गये अब भाट खौ बड़ो बुरो लगो कि अपनी बिटिया दामाद तक खौ नइ खवा सकें रात के भाटेन सो गई, भाट आधी रात खौ घर से निकल गये।

चलत-चलत दूसरे गांव पहुंचे उतै एक नउआ पत्ता तोडत तो भाट ने पूछी- भैया का कर रये उने कही इ गांव के राजा पुरी से आएं हैं तो कल पूरी नगरी को भोज दे रहे हैं। तो भाट बोले- हम पत्ता तुडवा दे तो हमें भी भोजन मिलहै। नाउने कही तुडाओ चाहे न तुडाऔ बे सबखौ खवाहे। तो उनै कही बैठे तो हैंइ लाओ तुडवा दें।

दूसरे दिन भोजन कराये गये तो उतै भाट उंची दृ उंची नीची जगहा देखत फिरैं नाउ समझ गओ खौ देहरी में बैठा दओ, इ तरफ वालन ने मी परसो दूसरी तरफ पालन ने मी परसो। एक पनवारे को भाट ने खा लओ, दूसरे पनवारे को बाहर एक मटकिया दिखी, उमें भरके उगांव की ग्वालनन खौं देके कही दृ हमायी पठौनी ले जाओ भाटेन खौ दे दइयो, बोली हओ। थोडी दूर जाके उनोरन ने देखो कि भाट ने का भेजो है जिनने हाथ लगााये

चिपक गये। बोली- भाट की पठौनी भाट खौ जाय, हमाए हाथ निकल आएं, तो निकल गये फिर जाके दें आयी।

इते भाट राजा के पास गये बोले भोजन तो बहुत अच्छे थे। राजा बोले सब जगन्नाथ जी की कृपा है, भाट बोले हमें उन की रस्ता बता दो हम भी जेहै। राजा ने रस्ता बता दई भाट चले।

रस्ता में दो आम के पेड़ मिले बोले भाट कहॉ जात हो कही जगन्नाथपुरी। बोले हमाओ संदेशो कहियो हम फलतफूलत हैं पर कोई नइ तोडे खाय, बोले हऔ। आगे दो तलैया मिलीं बोली हमाओ संदेशो कहियो भरे पूरे हैं पर न कोई पानी पिये न नहाय, बोले हऔ।

आगे गये तो गैया एले पार बच्छा पैले पार, हमाओ संदेशो कहियो हम मताई बेटा को मिलन नइ होय। और आगे चले तो उलिदो घोडा फिरे कही हम इतने अच्छे हट्टे कट्टे है पर हमाए उपर कोई सवारी नइ करे हमाओ संदेशों कहियो और आगे गये आधो सांप बाहर आधो भीतर और आगे गये तो एक लुगाई सिर पै लकडी को गत्था रखे उतरत नईया और आगे एक के सिर पै तवा चिपको निकलत नइया और आगे चले पीछे पटा चिपको, नइ निकले कही हमाओ संदेशो कहियो।

अब और आगे चले तो कही एक राजा छः मंजिल को मेहल बना लेत हैं सातंवीं बनात हैं तो गिर जात है उनने कही हमाओ संदेशों कहियो।

अब सब के संदेशे लेके जगन्नाथपुरी पहुंचे मंदिर पहुंचतई पंडा से कही हमें भूख लगी भूखी लगी। पंडा बोले भई जो का है अरे पुरी आये हो तौ सामने समुद्र है जाओ नहाओ के आओ भगवान के पट खोलत हैं उनके दर्शन करौ फिर खाओ। तौ भाट ने ऐसइ करौ। फिर पंडा ने एक दाना एक दाना चावल एक चुटकी आटा और बटुआ कुपरिया दे के कही दृ जाओ बनाओ खाओ। बो मुह में उंगलिया लगा के रह गओ कि जो तो बटुअई में चिपक जेहै पंडा बोले लगत है तुम जगन्नाथ जी महिमा नही मालूम। चलो एक एक दाना और दे दओ अब भाट ने बनाओ तो बटुआ फटे जाएं

आटा देखो तो माडे से खूब हो गओ रोटी बनात दृ बनात शाम हो गयी पंडा आये बोले, अवै तुमने नइ खाओ। बोले का करैं जो खतम नइ होय, पंडा बोले ओंधे सीधे हाथ पटक दो कछु समुद्र में मच्दकुच्छ खौ डाल दो। भाट ने वैसइ करौ फिर खाऔ।

भाट अब रोजइ ऐसो करें सबेरे उठे नहाय धोंय, भगवान के दर्शन करें एक . एक दाना दाल चावल लेके बनाय खाएं रहे आंए ।

इतै जब ग्वालनन ने भाटेन खौ पठौनी दई कि ज तुमाए भाट ने भेजी है उनने सोची काल गये आज पठोनी कैसे भेजी, भीतर जाके खोल के देखो तो हीरा मोती झिलिरमिलिर होएं। सोची- पैसा से परेशान तो थे लगत है कोई राजा के इतै चोरी करी है कहुं पकड जेहै तो सजा हूहै जल्दी राजा के दरबार में गई चौकीदार ने कही, काहे को आयी हो बताओ मटकी खोली तो दाल भात कढी थी वे बोले का राजा ने जो नइ देखा जोन दिखावे लायीं घर गई फिर सोना चांदी दरबार में आयी तो फिर हलुआ मालपुआ। भाटेन बोली हमें राजा से मिलन दो, फिर गई तो बताओ राजा ने कही तुम्हें जगन्नाथ स्वामी ने दओ है खाओ विलसो। अब भाटेन ने उ पैसा से कुआ , स्कूल धर्मशाला, तालाब अस्पताल सब बनवाये और सुख से रहन लगी।

पुरी में देखो तो भाट के पास जगन्नाथ स्वामी आये बोले भाट तुम घर नइ जात। बोले महाराज उतै जाकै का करहैं भूखनमरत हैं जगन्नाथ जी बोले हमाए मंदिर के पीछे तुमडिया लगी है उन्हें तोड के ले आओ उसे जो कछु मांगहो मिल जैहे भाट गये एक तोड के रखी सोची हमायी छोटी बिटिया भी गरीब है एक और तोड लें, तो तोडवे खौ करौ तो पहली भी चिपक गई अब परेशान हो गये नइ निकाली फिर जगन्नाथ जी आये बोले तूमने तिसना करी ईसे ब चिपक गयी जो हमाये पास आहै उखौ देहैं अवै तुम ले के जाओ।

अब भाट रात भर चलें दिन के पुरी के पुरी में। तब भगवान ने कही का बात है कोई के संदेशे तो नइ लए। बोले हों महराज भगवान बोले

ऐसो नइ करो चहिए कि अपनी बात बना लइ दूसरे को कष्ट भी मिटाओ सब के संदेशे पूरे करौ तब भाट बोले दृ महाराज सबसे पहले दो आम के पेड़ मिले बोले बे उ जनम के भाई दृ भाई हैं एक दूसरे से कभी गले नइ मिले बैरइ बनाय रहे। तुम जाके तुमडिया छुवा के एक दूसरे में डाल मिलाके आम तोडियो खइयो सब कों तोड है।

दो तलैयांमिलीं, बे उ जनम की देवरानी जिठानी आएं न उनने उन्हें ढांक बायनो दओ, न उनने उन्हें दओ तुम दो चुल्लु पानी ई को उमें, उको ईमें डाल के नहइयो धोइओ, सब कोई नहा है।

गैया बछडा मिलन नइ होय, बोले उ जनम के मां बेटा हैं देवरानी मायके जात में जिठानी से बोल गयी हमाए बच्चन खौ रखियो तो ब अपने खौ अच्छे खवाय उकै बच्चों खौ जूठन मीठन दे दे ईसे बे बिछुडे हैं तुम तुमडिया छुवा दइयो तो मिल जेहैं ।

आधो सांप बाहर आधे भीतर वे ऐसे आएं उ जनम में अपनी विद्धा कोई खों नहीं दयी ईसे अब वे फसे है तुमाडिया छुअईयो कोई भी तरफ निकर जैहैं एक सिर पै लकडी को गथा रखे बोले उ जनम में लकडी काटती रही अपनी सिर को भार उतरवा लेती थी दूसरे की बखत भग जाती थी इसे बो चिपके है तुमाडिया छुआ दईओ अलग हो जैहै।

एक पीछे में पटा चिपकाएं, बोले बे ऐसी आएं सास नन्द या कोई भी घर में आय बे नीचे बैंठे जे हमेशा उपर बैठी रहें तुम तुमडिया छुवा दइयो निकल जेहै।

एक सिर पै केलौ रखें, बे ऐसी आयं, सासनन्द तलैया कपडा धोवे जान लगी कही बेटा भूखी न रहियो रोटी बना लइयो तो जे झट गरम रोटी बना के तवा चढो रेहेन दे और खालें, सास आके पूछे बेटा खा लओ कहै बे धरी तुमायी बासी रोटी, नइ खाओ, तवा देखत रहौ तो ई जनम सिर पे चिपक गओ, तुमडिया छुवा दइयो निकल जेहै।

एक राजा सातवीं मंजिल महल नइ बना पाय, बोले दृ उनसे कहियो गांव भर में प्रेम रखें हैं बहन भनेजन से बुराइ करैं है **सौ बाम्हन एक मानदान** उनसे कहियो उन्हें बुलाएं तो इमहल बन है।

जगन्नाथ स्वामी बोले संदेशे पूरे करके जाओ तो चैत के सोमवार चार या पांच जोन पडे तो पूजा करिया पट बैंत की अब सब पूरों करके भाट चले तो पहलो सोमवार दांएवाले के इतै पडो उसे बोले हम पूजा करत हैं हमायी कथा सुन लइयो। बो बोलो हम न सुनहैं इतै में हमाओ कितनो काम हुहै तो भाट के पीछे उनके दाएं में आगी लग गइ, बुलाओ भाट खौ जो का करो तुमने, बोले हम नइ जाने जगन्नाथ स्वामी जानें, फिर उनने पूजा कथा कही अपने आप आगी बुझ गयी डंडा तुमडिया ठोके ५६ भोग निकले, भोजन करे बोलो हमें भी जगन्नाथजी की रस्ता बता दो, बतायी तो बो चलो गओ ।

चलत-चलत दूसरो सोमवार गडरिया वाले के इतै पडो, उसे कही हमायी कथा सुन लो, अरे जब तक कथा सुन हैं हमायी गाडेर कहां चली जेहैं ठीक है आगे जान लगों तो सब गाडरे ओइके पीछे जान लगीं, तो कही कहौ कथा। पूजा करी कथा कही गाडरे उतइ बैठ गई, डडा तुमडिया ठोके ५६ भोग निकले दोनों में खाओ, बड़े अच्छे भोजन हैं हमे भी जगन्नाथ जी की रस्ता बता दो, बता दई तो वे भी चले गये।

तीसरो सोवार बड़ी बिटिया के इतै पडौ, सोची अब कछु चिन्ता नईया बाहर उके लडका बिटिया खेलत रहे, कही जाओ भीतर कहियो नाना आये, उनोरन ने कही तो उने कह दई जी दिन से बाप गओ मताई अच्छे से खान लगी ईके भाग से नइ रहो घर में और हम दूध मलाई खावे वाले इनके गोलरा बेलरा न खा हैं, न टुटका टमना की कथा सुन हैं बाहर एक कोढी पडो है ओइ खौ सुना दें। भाट खौ बड़ो अपमान लगो उनने कोढी की गुदी में जवा रख दये, पूजा करके कथा कही, बो कराह रहो थे कथा सुनत सुनत बिल्कुल अच्छे हो गये भाट ने डडा तोमाडिया ठोके ५६ भोग निकले

दोनो ने खाऐ कोठी ने कही जिनकी कथा सुनवे को इतनो महत्व है उनके दर्शन से कितनो लाभ हू है हमें उनकी रस्ता बता दो, वो मी चलो गओ।

चलत चलत चौथे सोमवार छोटी बिटिया के इतै पडो, सोची ज भी ऐसो अपमान करेहैं फिर सोची गरीब है एक बार कहदें बच्चन से पूछी कहां है मताई, बोले पीसवे कूटवें कही जाऔ कह हो नाना आएं है उनने जाके कही तो जल्दी मालकिन से छुट्टी लैके आ गयी, बाप से कही अवै भाट तक कहं गये थे बोले जगन्नथ जी। उनइ की पूजा कथा कहने है जल्दी नदी में नहाओ धार में लंहगानुगरो मिल है तो पहल के आओ पूजा करैं उनने कहानी कही कहतै कहत झोपडी से महल बन गओ डडातुमडिया ठोके छप्पन भोग निकले इतने में दामाद लकडिया काट के, आए और रखी फिर पांव पडे अच्छी हष्टपुष्ट काया हो गई लकडियां चंदन की हो गयीं, अच्छे भाव बिकीं।

अब पांचवो सोमवार भाट खौ अपने गांव में पडो, पर सब जगहा कुआं बावली, स्कूल धर्मशाला सबके कुदराती भाट उको नाम लिखो थो, सोची भाटेन ने इतनो बना लओ, पैसा कहां से आओ सोचत कुआं के पाट पै बैठ गये। गांव की औरतें पानी भरवे ने आयीं तो जल्दी भाटन के पास गयीं कि तुमाए भाट आए हैं, कहन लगी काए खौ मजाक करती हों का पता कहां है बे। कही चलो देखो, देखे तो पांव परै घर चलो भाट ने कही पहले बताओ जो सब पैसा कहां से आओ उने सही बता दई उन्हें विश्वास हो गओ, भाट बोले कल आखिरी सोमवार है भंडारा करने है जगन्नाथ जी को। भाटेन कहन लगी हंसी न कराओ इतनी जल्दी कैसे हू है, उनने भोज दओ जगन्नाथपुरी की सब बात बतायी, घर आके लीप पोत लओ दूसरी दिन पूरी नगरी खौ मोज दो। पूजा करी डडातुमडियां ठोके छप्पन भोग निकलन लगे, भोजन शुरू हो गये, नाउ ने राजा से कही भाट तुम्हें नीचो दिखा रहो, कढी सब एक साथ खावे पहुंचे भाटेन तरह-तरह के कपडा पहन के परसे नाउ ने बिछिया में कडी को छीटा डाल दओ कि ज भाटेन आय राजा घर गये रानी से कही रानी इतने अच्छे भोजन आज तक नइ करे अन्दर कुछ ठक-ठक

होत रहो ओइमे अच्छे कछु जादू है तुम ले आइयो। रानी गई वास्तव देख सुन के रह गई फिर अपने कुवर को चौटिया काट के रोवाओ कही उखो तुमाओ ठक-ठक चहिए दे दो।

भाट भाटेन चुपचाप रह गये दे दओ अब राजा, रानी बड़े खुश कि हमें नीचो दिखा रहो थो हम कल भोज कराहें पर भगवान की महिमा देखो।

दूसरे दिन राजा उठे कमरी ओढें रानी उठीं कथरी ओढें, चारों तरफ भिनरभिनर। नाउ खौ बुलाके भाट खौ बुलवाओ, का जादू करौ, बो बोलो हमें नइ मालूम, जगन्नाथ स्वामी जानें। कहां हैं चलो बताओ भाट भाटेन और राजारानी चले, थोडी आगे चले थोडी देर में बड़ी बिटिया छोटी से लडत आ गयी कि बाप ने जादू टोना करके सब उखौ दे दौ भाट ने कही तुम भी चलो जगन्नाथपुरी थोडी आगे चलो तौ जगन्नथ स्वामी मिल गये बोले- भाट कहां जा रये, हमइ हैं जगन्नाथ। भाट बोले कैसे माने आप आम के पेड़ में कच्चे सूत में झूल जाओ, करवा की टोंटी से निकल जाओ। वैसे करौ तो भाट ने खूब पैर पडे कि आपने तौ इतनो दओ पर हम इनौरन के मारे नइ रह सकें। जगन्नाथ स्वामी राजा से बोले- तुमाए पास इतनो धन थो भाट की तुमडिया में नियत काहे लगायी तुम हमाए पास आ के लेते उन्ने क्षमा मांगी। फिर बड़ी बिटिया से कही तुम्हें तो बहुत घमंड है तुम हमाए गोलरा बेलरा काए खौ खाहौ, तब उनै भी क्षमा मांगी। जगन्नाथ स्वामी ने सब को खूब भंडार भर दओ। ऐसी कृपा सबके उपर करैं।

जै जगन्नाथ स्वामी

---oo---

श्री जगन्नाथ जी

ठाकुर भले विराजे जू, ओडीसा जगन्नाथ पूरी में भले विराजे जू।
कब से छोडी मथुरा नगरी, कबसे छोडी काशी।
झार खंड में कब से विराजे वृन्दावन के वासी।। ठाकुर भले .....
सतयुग छोडी मथुरा नगरी, व्दापर छोडी काशी।
कलौ काल में आन विराजे वृन्दावन के वासी ।। ठाकुर भले.....
कोजो मागें अन्ना धन्ना, कोजो मांगे रूप।
कोजो मांगे निर्मल काया, कोजो मांगे पूत।। ठाकुर भले.....
साधु मागे अन्ना धन्ना, राजा मांगे रूप।
कोढी मांगे निर्मल काया, बांझ मांगे पूत।। ठाकुर भले.....
उडिया मांगे खीचडी, बंगाली मांगे भात।
साधु मांगे दर्शन, और महाप्रसाद।। ठाकुर भले.....
दाल रांधू भात रांधू, परवल की तरकारी।
मीड मांड के भोग लगावें, प्रेमी जाति बंगाली।। ठाकुर .....
गांव गांव में बाग बगीचा, गली गली फुलवारी।
घर-घर देखो केला नरियल, घर-घर ठाकुर बारी ।। ठाकुर.....
दो-दो कोस पे हाट लगाई, पांच कोस पर चट्टी।
चलते-चलते पांव पिराने, शरीर हो गयी मट्टी।। ठाकुर .....
चट्टी-चट्टी बनिया लूटे, और लूटै फिरंगी।
सिंह दरबाजे पंडा जूटै, यात्री भये उदासी।। ठाकुर.....
नील चक्र पे ध्वजा विराजै, मस्तक सो हे हीरा।
ठाकुर आगे दासी नाचे, गावे दास कबीरा।। ठाकुर.....
ठाकुर भले विराजे जू आडीसा जगन्नाथ पूरी में भले विराजे जू।।

अक्षय तृतीया (आक्ति)

धैला भर के आम सतुआ शक्कर को करौ दान।
पुतरा पुतरी पूज के, अक्ति को बढाओ मान।

जो त्यौहार उतरत बैसाख की तीज खौ होत है। ई दिन को करो दान, तप, पूजापाठ सबको फल अक्षय होत है, ईसे ईखौ अक्षय तृतीया कहत हैं। ई दिन पंखा, धैला पानी भरो, सतुआ शक्कर, घी चांवल फल, आदि के दान करवे को बड़ो महत्तम है। कोई भी मंगल काम करने होय, तो जो बिना पूछे को शुभ दिन रहत है। ई खो अक्ति भी कहत हैं।

आज के दिन पुतरापतरिया की पूजा होती है। भगवन के सामने सबेरे पांचखूट को लीप के चौक पूर लो उके उपर मटका, धैला, सुराही काई भी तीन बर्तन मिट्टी के दो लोटा पीतल या स्टील के ऐसे बर्तन में पानी भर के रख लो, मिट्टी के बर्तन घी से मी टीक लो फिर सब में कच्चो सुत मंहडे में बांध लो उपर प्लेटन में सतुआ शक्कर, कच्चे आम दो-दो या चार-चार पपडिया रख लो, उतई एक दो ठौ चीमरी पंखा धर लो, धैला, मटका के सामने पुतरा पुतरिया खौ देवी स्वरूप मान के उन्हें अच्छे कपडा पहना के सजा के बैठा लो। फिर सबकी एक साथ पूजा कर लो। पुतरिया की चुनरी में पैसा सुपारी पीले चांवल बांध दो फिर पुतरा के दुपट्टा से उकी गांठ बांध दो फिर कछु मीठा रख के भोग लगा दो। ऐसी विध से पूजा पूरी करत हैं।

शाम के समय तुलसन के पास उन पुतरा पुतरियन की छै ठइयां मांवर पाड के जिमा के फेर ऐसइ गांठ बंधी बंधाइ एक जगहा उठा के रख देत हैं और सातवी बट अमावश के दिन बरा के नीचे और न मिलै तो तुलसी के इ पास में भांवर डाल के बैठा दो फिर उनको भोग लगा दो थोडी देर बाद गांठ खोल लो। तब पुतरा पुतरिया की पूजा पूरी कहात है। ई के बाद घर की बिटियां उनसे खेल सकतीं हैं। अक्ती के दिन जोन धैला मटका की पुजा करत हैं एक दो ओइमें से दान कर दो उनके उपर जो मी सतुआ सक्क्र बगैरा रखो उखौ भी दान कर दो ई में कोई उपास नइ करैं, पर ज पूजा करवे को पुन्य बहुत मिलत है।

आज अक्ति के दिन उत्तराखण्ड में बद्री नाथ भगवान के पट भी चार महिना के लाने खुल जात हैं।

---oo---

वट आमवस

बड़ नीचे पुतरियन की गांठ छोड उन्हें जिमाएं,
पति की लंबी उमर हो, पेड़ की परकम्मा लगाएं।
सावित्री तप करो लौटा लओ अमर सुहाग,
बड़ पूजा, कथा कहो, भरो रहै सबको ऐबात।।

जेठ के महिना की अमावश खौ वट अमावश्या कही जात है। ई दिन सुहागिनें और बिटियां अपने पुतरा पुतरिया वट (बड़) के पेड़ के नीचे ले जाके पूजा करती हैं पुतरापुतरी की एक भांवर और डाल के उतई बैठा देती हैं उन्हें जिमा के खुद भी बड़ की पूजा करके परिकमा लगा के मुह जुठारती हैं, फिर उनकी गांठ छोड के घर ले आती हैं। अपने पति की लंबी आयु के लाने पूजा करके ज कहानी कहती है।

कहानी-राजा अश्वपति के कोई संतान न हती तो उनने सावित्री देवी खौ तपस्या करके प्रसन्न करो और संतान को वर मांगौ बे बोली तुमाए भाग में तो सात जनम तक संतान नइ है पर तुमने इतनी तपस्या करी तो हम खुद कन्या के रूंप में आहैं।

नौ महिना बाद इनके एक कन्या भई उको नाम सावित्री रखो अब सब बात में होशियार होत भई ब्याव लायक हो गयीं तो राजा ने कही सावित्री जो वर पसंद कर है, उकै साथ हम शादी कर दे हैं। एक बखत राजकुमारी अपनी सखियन के साथ बन घुमते गई। उतै जगंल में सत्यवान अपने माता पिता की सेवा कर रहे थे। देखवे में भी बहुत सुदर थे बस उनने मन में सोच लइ कि इनै से शादी करने है।

घर आके अन्ने माता पिता खौ बतायी इतने में नारद जी आ गये उन्ने राजा से कही कन्या जो वर पसंद करके आयी है वे तो सुन्दर और

योग्य पर उकी आयु आज से पूर एक वर्ष और है राजा ने कन्या खौ समझाऔ कि अल्पायु है इसे हम शादी न कर हैं पर बे बोली जिन्हें हमने एक बार में अपनो पति के रूप में देख लओ अब दूसरे के बारे में सोच भी नइ सकत, शादी उतइ कर हैं।

राजा ने उनके साथ ब्याव कर दओ सावित्री सासरे आयीं तो अपनी राजसी पोशाक उतार के वल्कल चीर पहन के उनइ के जैसे रहन लगी। राजपाट छिन जावे से रो रो के साससुर अंधे हो गये थे उनकी सेवा और अपने पति की सेवा मन लगााके करन लगीं। और अपने पति की आयु के दिन भी गिनती जाती थीं। जब आखिरी के तीन दिन बचे तो वे निर्जला व्रत करन लगीं, और जब आखिरी दिन बे लकडी काटवे जान लगे तो सबकी आज्ञा लेके बे भी साथ में गईं।

पेड़ हमें लकडी तोडत-तोडत बोले हमाये सिर में बहुत तेज दर्द हो रहो है उनने कही आप उतर के आ जाओ और आई बड़ के पेड़ के नीचे उन्हें लिटा के अपनी गोदी में उनको सिर रख लओ, दबान लगीं इतने में भैंसा पै सवार हो के यमराज आये बोले सावित्री सिर नीचे रखो फिर उन्ने प्राण खींचे लेके चले, यमलोक को पहलो दरबाजा आओ, यमराज ने देखो पीछे सावित्री है। बोले लोट जाओ उनने मनाकरी तो बोले ठीक है हम प्रसन्न है तुमायी पति भक्ति से, अपने पति खौ छोड के वरदान मांगो उनने कही हमाए सार ससुर की आंखो की रोशनी आजाए। बोले- तथास्तु, आगे बढ गये। दूसरे दरबाजे में देखो फिर सावित्री हैं बोले पति खौ छोड के मांगो वरदान। बे बोलीं सास ससुर खों राजपाट वापस मिल जाए बोले तथास्तु। फिर यमराज आगे चले, तीसरे दरबाजे तक पहुंचे देखो फिर पीछे सावित्री हैं बोले तुम हर दरवाजे के इतने कष्ट स के इते तक आ गई हम तुमाइ भक्ति से प्रसन्न है वरदान मांगो पर पति खौ छोड के। बोली हमाए सौ पुत्र हो, यमराज बोले तथास्तु और आगे बढ गये जब चौथे दरबाजे पै पहुचे देखो फिर पीछे सावित्री। बे बोले -सावित्री इतै तक कोई नइ आ पाओ तुम

यातनाएं सह के आ गयीं, बोलो का वर दान चहिए। सावित्री बोली- महाराज हम अपने पति के सिवाय दूसरे की और देख भी नइ सकें, और आपने हमें इन पति से सौ पुत्र को वरदान दे दओ है तो अब उनके प्राण भी दो। तो यमराज बोले हम तुम सती सावित्री के आगे हार गये। सत्यवान के प्रांण वापस दये बे नीचे आयीं बट वृक्ष की परिक्रमा लगाके सत्यवान खौं उठाओ, बे बोले बड़ी नींद लगी थी।

अब दोनों जन वापस लौटन लगे तो साससससुर ढूढत आ गये। उन्हें आंखन की रोशनी और राजपाट सब मिल गओ सावित्री अपने पति सत्यवान के साथ सुख से रहन लगीं। तबइ से जो चलो है कि जो कोई वट की अमावश के दिन पूजा करे परिक्रमा लगो उनको सुहाग सावित्री के जैसो अमर हो जात है। जय हो, जय हो वट अमावस की।

---oo---

गाज बीज

गाज बीज को हाथ लगा लो,
सब त्योहारन को मान बढालो।
चार महिना के देवी देवता मना लो,
उनकी किरपो से सब सुख पा लो।

विधि-हर पूजा की तरह ई पूजा में हरदी रोरी चांवल फूल दूबा भोग के लाने मीठा रखो जात हैं फिर अच्छे से पूजा करके कहानी कही जात है।

कहानी-ऐसे-ऐसे मां बेटा रहे, बेटा को ब्याव हो गओ, नाती पोता हो गये। बहू तनक अलगइ मिजाज की रही। बेटा अपनी मताई खो खूब चाहत तो। घर में खेती बाडी रही। मताई ने कही बेटा तुम्हें अपने काम से फुरसत नइया, हम खेती जाके देख लेहैं तो उने अपनी घरवाली से कही हमायी मां चार महिना के लाने गावं खेत देखवे जा रहीं है उनके साथ अच्छो सो कलेवा बना के रख दो। बोली हओ, और कना के लड्डू बनाके टीन में रख दए कही ले जाओ उतै खइयो। बेटा उन्हें छोडके आ गओ।

खेत में एक कोठा रहो उतइ पै रहन लगीं रात के सोई तो कोई ने किवाड खटखटाए, खोले बोली को आओ, कही हम अषाढ हैं कही बहुत अच्छे आये अब खूब उमड घुमड के बादल आहें, खेती के लाने फायदा है और इ महिना में गाज बीज की पूजा, रथयात्रा बाराजीत, अषाढी छिटकी डलहै अच्छे से उनकी आवभगत करी रोज सबेरे उनके नाम से भोग लगायें और प्रसाद पाके रहीं आएं। महिना निकल गओ उने आशीश दई।

अब रात के सोईं तो फिर किवाड खटखटाये बोली कौन है कही हम सांवनहै बोली बड़ी खुशी कि बात है आओ सावन तीज मे झुला पड है नाग पंचमी हूहै राखी को त्यौहार आ है सब बहने बिटिया मायके जेहैं राखी बाधें और उनकी अच्छे से आओ भगत करी उन्हें भी बेई लड्डू खावे देती रही महिना निकल गओ और बे भी आशिश दे गई

रात के सोई फिर दरवाजे खटके तो बोली कोन आओ भईया उने भादो आये बोली बहुत खुशी भई अब सब त्यौहार आ गये हरचट, जन्मष्टमी, बछबारस, तीजा, गणेश चौथ, संतान सातें अनन्त चौदस पूरो

महिना पकवान बनत हैं पूजा होत है उन्हें भी रोज खावे दओ, उनने भी खूब आशिश दई फिर महिना चलो गओ

अब रात के सोई तो फिर किवाड खटके बोली कोन है कही क्वार आयें। बोली भले आए, सब कोई अपने पितरन खै पानी दे हैं श्राध्द कर हैं फिर नौ दुर्गा, दशहरा, शरद पूनो सब त्यौहार मना हैं उन्हें भी रोज खावे दओ, बे भी खूब अशीष दे चले गये। माताराम की खेती खूब लहायी, बेटा खौ खबर भेजी। बेटा गाडी ले के आ गओ हर साल से भी अच्छी खेती भई खूबमाल भर के मताई को लेवा ले गओ घर जा के अपनी लुगाई से खूब तारीफ करी कि देखो कितनी खेती करवा के लायीं है। बहू सुनी न गई कही हमायी मतायी ईसे भी अच्छी खेती कर सकती हैं। लडका बोलो ठीक है दूसरे साल उनको बुला लओ।

जब बे जान लगी तो बिटिया ने शुध्द घी के लडडू और खूब कलेवा बना के रख दओ मताई से कही अपनो स्वास्थ देखियो कोई खै न दइयो खावे, लडका अपनी सास खौ गांव के खेत में छोड आये। अब जैसा उनके साथ भओ तो इनके साथ भी भओ। रात में सोई कोई ने किवाड भडके, बोली कौन आय। कही अषाढ आये कहन लगी काहे आए दिन उमड घुमड बरस है कीचकादो हूहैं रथयात्रा अषाढी छिटकी हमें नइ डालने और खावे के बदले कुतक्का बतादओ, गुस्सा हो के महिना चलो गओ उनके सींग उग आओ।

फिर रात के सोई तो सावन आ गये बोली वैसेइ आए भगवान को झूला डालो, बहुअन खौ मायके भेजो बिटियन खौ बुलाओ खर्चा को घर शुरू। उनकी आवभगत न करी कुतक्ता बतादओ। सावन नाराज हो के गये खेती अच्छी नही भई, दूसरो सींग उग गओ। अब रात के सोई तो फिर किवाड खटके, उनने पूछी तो कही भादो आये बोली काहे आए, अरे भइया ई महिना में त्यौहारइ त्यौहार पडत हैं खर्चा भी होत है उपासे भी रहो दिन भर पूजा रचा में दिन निकलत है उखो भी कछु मानपान न करो बौ भी महिना उदास हो के निकालो बिना अशीष दएं चले ये अब इनको तीसरो सींग उग गओ।

फिर रात के सोई नींद खुली देखो तो अब क्वांर आ गये काये भैया तुमाओ आवो तो अच्छो न लागों पितरन में सबकी सराद करो बाम्हन खवाओ, फिर नौ दुर्गा आ गई तो सबेरे से देवी ढाखे जाओ, पूजा करो,

फुरसतइ नइ रहे, उन्हें भी कुतक बता दआ। चौथो सींग उग गओ। इतै घर में बहू आदमी से रोज लडै अपनी मताई खौ तो जल्दी लिवावे चले गये हमायी मताई खों भी लिवा के लाओ उनने तो तुमाइ मां से चौगुनी खेती कर के रखी हूहै। लडका ने कही ठीक है हम जा रहे हैं पर मां खौ अपने लडका बिटिया के जैसे अच्छे से रखियो, जब बे चले गये तो सबेरे से सास खौ खावे पीवे बैठा दे और कहें जैसो लडका करत हैं वैसइ तुम करौ सरे दिन नउआ खौ बुलाओ लडकन के बार बनवाए तो सास खौ बैठा के उनके भी बार बनवा दये। बे बहुत परेशान हो गयीं बहू से, पर रो के रह गईं।

इतै देखो लडका गांव में खेत में गओ तो खेती बिल्कुल नइ भइ, झोपडिया में आवाज लगायी सास खौ। तो उनकी बोलवे तक की हिम्मत न रही। भीतर जाके देखो चार ठइया सींग उगे लस्त सी डलीं हैं जैसे तैसे करके उन्हे एक बैल गाडी में पारो बाकी बैलगाडी खाली ले के घर पहुचे बहू से कही देख लो अपनी मताई खों, ज खेती कर के लायीं हैं सब सूखो पडो है। और जब उनने अपनी मां खौ देखो तो बोले, बार काये बनवाये, कैसी सूरत बनी है, तो बे रोन लगी बोली बहु ने बनवा देय। लडका खों गुस्सा तो आयी पर कछु न बोलो चुपचाप उके मायके चले गये।

बहू के सात भैया रहे, उनसे कही-तुमायी बहन बहुत ज्यादा बीमार है कोई दवाई से फायदा नइया। पंडित खै दिखाओ है तो उनने कही है बहू के सातों भाई मूड मुडवा के बिना कपडा पहने अकेले लंगोट पहन के उल्टे डंडा लेकर पैदल दौडत भये बहन के पास आएं तो बिल्कुल अच्छी हो जैहै। उनके एकइ बहन थी खूब चाहते, सबने बैसइ करो। लडका इतनी केह पहले घर आ गओ, अपनी घरवाली से कहीं तुमाए भैया सब तुमसे मिलवे आ रहे हैं अच्छी साडी पहन के आरती लेके द्वार पे खडी हो जाओ उने वैसइ करो जब सब भैयन खों ऐसी हालत में देखो तो रह गइ जो का हो गओ इनौरन खौ। तो भैयन ने उनकी सब बात बताई, बोली ऐसो अपमान हमाए भाईअन को काये करौ तब लडका ने कही देखो हमाायी माताराम की मूड मुडवा के का दशा करी है तो हमने भी ऐसो करो, **तेने मोरी माय मुडाई मैंने मुडियन ढेर लगाई।**

तब बहू ने माफी कि आज से हम अपनी सास के साथ खराब व्यवहार न कर हैं। और वैसे भी बे ज्यादा अच्छे अचार विचार की हैं उनने गाज बीज को हाथे लगाकर चार महिना को खूब अच्छे मन से आवभगत

करी ईसे घर में इतनी सुख समृध्दि आयी। जो कोई भी ज पूजा करत है चार महिना के देवी देवता सब प्रसन्न होत हैं।

दूसरी कथा

एक बखत बरसात के दिनन में भादों की शुक्ल दोज खों एक राज को लडका शिकार खेलवे जंगल गओ, ओई जंगल में एक गरीब ग्वालिन को लडका गैया चरावे गओ, अचानक तेज पानी बरसो और गाज गिरी तो राजा को लडका हाथी से उतर के कोई झोपडी में के अंदर चलो गओ गाज झोपडी पे गिरी लडका खतम हो गओ औ ग्वालिन को लडका एक पेड़ के नीचे खडो हो गओ गाज गिरी तो लडका चारो तरफ रोटी से ढक गओ तो बच गओ, पानी रूको तो राजा सिपाही सब उ जंगला में राजकुमार खों ढुढवे आये तो उतै के आदमियन ने जोन आंखन से देखो सब हाल बताओ की ग्वालिन रोज एक रोटी गैया खौ खवात है या भूखी क्वासी कन्या खौ खवात है इसे उ लडका के चारों तरफ रोटी छा गई तो उकी जान बच गई, राजकुमार की नई बच पायी।

फिर राजा न अपने गुय से बतायी कि हम भी इतनो धरम करम करत हैं पर हमाओ लडका नइ बचो, गुरू ने कही घमंड के साथ करो भओ पुन्य ज्यादा नइ रहै, गरीब औरत श्रध्दा से करतती इसे उके उपर गाज न गिरी। तब से सब कोई गाज बीज की पूजा करन लगे, जीमें कोई के उपर न गाज गिरे न कोई आफत विपत आय।

।।जय हो भगवान की।।

---oo---

हरचट

वंश बढावे बास टुकनिया पूजे को महत्तम,
महुआ भुजैनों डबुलिया दोना पूजा में उत्तम।
उपासीं, पसई चांवल, भैस को दूध दही घी खाएं,
हरचट माता हों प्रसन्न, लडकन की उमर बढाए।।

जो त्यौहार भादों के महिना में कृष्णं पक्ष की छटें खौ बनाओ जात है। आज के दिन कृष्ण जी के बड़े माई बलराम जी को जनम भओ थो उनको शस्त्र हल है ई से ईखो हलषष्ठी या हरचट कहत हैं। ज पूजा लडका की मताई करती है

ईमें हल से जुतो कोई भी अन्न या फल नइ खात है। गैया को दूध दही घी भी नइ लेत हैं। भैस को दूध दही घी लओ जात हैं।

पूजा विधि-हरचट की पूजा में बांस को भी बहुत महत्तम है बांस की छै टुकनिया, खौ एक जोडा कहत है एक दिन पहले टुकनिया भुजैंनों; सात तरां को अनाज भुंजो भओ बाजार में मिलत है। ईके अलावा ६डबुलियां, ६दोना इनकी भी पूजा करत हैं बाजार में बनी बनाई हरछठ मिलत है। पसई के चांवल खाये जात हैं मेवा चिरोंजी, मखाना, छुहारा भी ले सकत है छुहारा की खीर महुआ की डुभरी बनत है हरचट मे आटा की पपडिया बनती हैं आज के दिन भगवान के पास पांच खूट को गोबर या हल्दी से लीप के चौक बना के पटा रख के उके उपर गमला में हरछठ माटी में गपा के रख लो पसई चांवल थोडी से चढावे रख लो थोड से चंदन जैसे पीस के रख लो अब ६ टुकनियां, डबुलिया, दोना में गंगा जल छिडक के चंदन से टीक लो, आजकल टुकनिया की जगह ६ बर्तन जैसे कटोरी, गिलास भी रखन लगे हैं पर साथ में ६ बांस की कमटी जरूर रख के पूजा करत हैं कये से बास पूजो जात हैं सब में थोडी भुजैनो भर के रख लो फिर कलश उजियार के हरचट महारानी की पूजा कर के इन सबकी भी पूज करके कहानी कहत है।

हरचट की पहली कहानी

ऐसे-ऐसे सास बहू थीं। बहू रोज सबेरे चारा काट के बेंचवे जाय, जोन पैसा मिलै तो सास को देय। एक बार चारा बेंच के आ रही थी, तो

थकी ज्यादा थी तौ एक पेंड के नीचे आराम करन लगी उतै ६ अंडा रखे थे तो उके हाथ से भिसक गये तो हरचट महारानी आ गयी बोली जे हमाये थे अब तुमाए भी ६ लडका हूहै तो तुमैं सब लडका हमें देने पडहैं, पर कोई को बताहो न। अब उसे गलती तो हो गयी थी ईसे हां बोल के घर आ गयी।

अब नौ महिना बाद उके लडका भओ खुशी मनाई गई, जोन दिन चौक होने थो उके एक दिन पहले रात के हरचट महारानी बहू के पास आयीं बोलीं लडका दो तुमने वचन दओ थो, चुपचाप लडका दै के रोके रह गयी। सबेरे सास ने पूछी लडका कहां है बोली हमें नइ मालूम। कही कैसी लुगाई है ईखो अपनो लडकइ नइ मालूम, सब चुप रह गये, अगली साल फिर लडका भओ फिर हरचट माता ले गई ऐसे कर के पांच लडका उने ले लये घर में सब खौ अचरज होय, खूब रखवाली करै फिर लडका गायब हो जाए अब छटवों लडका भओ, सास खो चैन न पडी दरबाजे पे पावं अंडा के सो गयी आधी रात के हरचट महारानी आई बहू से लडका लओ जैसइ जान लगीं, सास ने उन्हें पकड लओ, तुम कौन आओ हमये लडका ले जातीं हों उनने कही अपनी बहू से पूछो उनै हमाए ६ अंडा भिसकाए थे तौ अपने ६ लडका देवे को वचन दओ थो ईसे हम ले जात है। तब सास ने उनके पैर पडे और कही कि इतनो वचन को बांधो कौन हो सकत है बहू अपनो मुंह बद करके कडी छाती करके अपना लडका दे देत है। माता अब तो बहू पै प्रसन्न हो जाओ हमाइ लाज राखो, आप लडका देती हों लेती नईया उनकी बातन से हरचट महारानी बहू पे प्रसन्न भई सास से कही जो लडका ले लो हम कल पांच लडका और लाके देहें सबको चौक करियो।

दूसरे दिन उनने छोटे से बड़े तक पांच साल तक के ६ लडकन को एक साथ चौक करौ। हरचट महारानी जैसे उनके उपर प्रसन्न भईं ऐसे सब के उपर प्रसन्न होंय।

---oo---

हरचट की दूसरी कहानी

दो देवरानी जिठानी थीं। एक बखत देवरानी ने चांवल की खीर बनायी, ओई दिन जिठानी ने चांवल की महेरी बनायी। दोनों बाहर आके आपस में बाते करन लगीं, इतने में दो कुत्ता, एक देवरानी के घर एक जिठानी के घर घुसो। जब देवरानी अंदर गई देखो कुत्ता खीर खा रहो है तो सोची अब ईकी जूठी खीर तौ कोई न खाहै तो चुपचाप बाहर आ गई कि अब कुत्तइ खा ले पूरी खीर। कुत्ता पूरी खीर खा के बाहर आ गओ।

दूसरे घर में जिठानी अंदर गई कुत्ता ने महेरी में जीभ लगायी खट्टी लगी छोडवेई वालो थे कि जिठानी आ गयी उनै देखो कि महेरी जुठार दई कुत्ता ने। अब उनै दरबाजा अंदर से बंद कर लै कुत्ता खौ बाहर नइ जा दओ और पटइ पटा से खूब मारो फिर बाहर निकाल दओ बो अधमरो सो हो गओ। रात के दोनो कुत्ता मिले पहले ने बतायी कि देवरानी ने हमें देख के भी नइ भगाओ, सामने से चली गइ तौ हमने पैट भर खीर खायी, हमें लगत है कि हम मरे तो ईके लडका बन के पैदा होंय और ईकी खूब सेवा करें।

दूसरे कुत्ता ने कही हमें तो महेरी अच्छी नइ लगी एकइ दो निबाला के बाद लौटवे वाले थे पर जिठानी ने हमें छेंक के इतनो मारो कि हमायी कमर टूट गयी अब भगवान से मनात है कि हर बार ई के गर्भ से बार-बार जनम लेके ईकी भी कमर तोड दे ऐसो कह के बो खतम हो गओ। अब सही में बो बार-बार जनम लेके खास हरचट खौ खतम हो जाए।

फिर खूब रोई हरचट महारानी से प्रार्थना करी कि का हमसे गल्ती भई, जब रात के सोई तौ बोइ कुत्ता दिखो तुमने हमें मार-मार के कमर तोडी, तो अब हम बार-बार तुमसे पैदा हो के तुमायी कमर तोड रहे है उने खूब क्षमा मंगी तो उको दया आ गई कही अच्छे से हरचट की पूजा करौ, उनकी कृपा से लंबी आयु को लडका हूहै। तौ उनने वैसइ करो। तो जिठानी के लंबी आयु को लडका भओ।

हरचट महारानी ने जैसे उनपै कृपा करी वैसी सबपै दया करैं।

जै हो हरचट महारानी की।

---oo---

बछबारस

पूजा करौ गौमाता की, कृपा बहुतै निराली,
सुख सौभाग देके घर में देती खुशहाली।
दूध, दही, घी गोबर मूत्र सब इनइ से मिलत,
कन्हैंया जू खों गैया बड़ी दुलारी लगत।

जो त्यौहार भादों महिना की कृष्ण पक्ष की व्दादशी खौं होत है। ब्याव भये के बाद से जो उपास चालू हो जात है। ईमें माटी की गैया बछिया बनाके उनकी पूजा करी जात है भैंस को घी दूध दही लेत हैं गेहूं चांवल (धान) धनियानई लइ जाय। उरदा मूग के बरामगोरा, चना बेसन, कुदई बाजरा लेत हैं आज अपने हाथ से कोई भी चीज काटत नइया और कटी चीजें खात भी नइया।

पूजा की थाली- हरदी रोरी कोदई चढवे को बेसन के पपडीया सेव बना के रख लो भैस के घी से डूबी फुल बत्ती अगरबत्ती फूल दूबा थोडी से फूले भऐ कच्चे चना रख लो।

पूजा की विधि-भगवान के पास गोबर या हल्दी से पांच खूंट को लीप के चौक बना के पटा रख लो, उके उपर माटी की गैया बछिया बैठा लो, आजकल तो पीतल की गैया बछिया भी रख लेत है। फिर कलश उजियार के गौर गणेश कलश की पूजा कर के गैया बछिया की पूजा करत हैं उतई पटा में बेसन की नाव और १० ठो बेसन की छोटी-छोटी सी टिकडी जैसी भी बना के रखत हैं पूजा करके बेसन की पपडियां भी चढात हैं फिर कहानी कहत हैं।

कहानी पूरी होवे के बाद आंचर के छोर में बेसन की नाव, कच्चो दूध आधा चम्मच, अंगूठी साथ में रख के सात बार गैया बछिया के उपर से घुमात हैं कहत जात है कि

सौ सासरे के आये, सौ मायके के आये,
नदी नारे पैरत आए मच्छ कुच्छ मारत आए।

ऐसो कहके मायके सासरे को भलो मनाती है। और पटां में जोन १० बेसन की टिकडी रखी रहती है उन्हें छत में ले एक-एक करके फेंकत जात है और कहत जात है कि **कौआ कोंची कौआ खाय, दूध भात मेरो भैया खाय**। बाद में एक दूसरे खौं टीका लगा के कोरा देत है।

पहली कहानी-

ऐसे-ऐसे सास बहू रहीं, एक बखत सास अपने खेत जान लगी, तो बहू ने पूछी आज खावे में का बना लेहैं, तो उने कहीं गेहूंआ रांध लइयों और धनियां कूट कपट के बना लइयो, बोली हओ, सास चली गयी।

भाग से उनकी गैया को नाम गेहुंआ थो बछिया को नाम धनिया थो। और सास तो अपनी टूटी फूटी भाषा में गेहूं खौ गेहुंआ कह गई, धान (चावल) को धनिया कह के गई। बहू खौ अक्ल न थी ज्यादा। उने सोची गेहूंआ हारै गई है धनिया (बछिया) घर में है तो बछिया खौ काट कपट के हडिया में चुखै घर दओ। दिन भर हो गओ चुरै ना। संजा के सास घर आयी बोली तुमने कछु खावे हमें न भेजो। बहू बोली का करैं, तुमने कही थी गेहुंआ रांध लइयो तो गैया तो हारै गई थी धनिया बछिया रही काट दओ के चढा दई, ब अवै तक नइ चुरी सास कहन लगी का बतारइ तुम, का बछिया खौ काट दओ बोली हॉ। अब सास तो माथे पै हाथ धर के रोन लगीं बोली अरे राम अब तो गैया के आवे की बेरा हो गई हम का जबान दे बी। उनने बछिया वाली हडिया सामने खोद गडा दई। इतने में गैया आ गयी, सास ने जल्दी किवाड बंद कर लए, रोती रही। गैया रम्भारमा के परेशान अपने सींग से जमीन खोदे और रंमाए, तो जमीन से बछिया निकल आयी। मुहल्ला वाले कहें रोज तो गैया की राह देखतीं थी आज तो किवाडइ नई खोल रही। इतने में बछिया की मी रंम्भावे की आवाज आयी, उनने झट किवाड खोले, गैया बछिया दोनों खडी थी। सास गैया के पांव पै गिर गई बोली-हमायी बहू ने तो मार डालो थो, पर गौमाता ने जिन्दा कर लओ, हमोरन के अपराध क्षमा करौ। प्रेम से भीतर ले गयीं बांधो, खां दओ, उ दिन से गैया बछिया की व्दादशी खों पूजा करन लगीं, गौ माता सब खौ बुध्दि दइयो और भंडार भरियो। जै हो गौ माता।

दूसरी कहानी

एक सेठ सिठानी थे उनके एक लडका थो और सात नाती थे। उ गांव में पानी की कमी थी, सेठ ने तालाब खुदवाओ पर पानी ना आओ, पंडित से पूछी उनने कही तालाब में कोई की बलि चढाओ तो पानी आ जैहे, सोच में पड गये कौन की चढाये। इतने में गैया बछिया की व्दादशी आयी तो बहू मायके गयी। उ बीच में सेठ सिठानी ने सोची एक नाती न रेहै पर पूरे गांव को तौ भलो हूहै ज सोच के कडो जी करके नाती की बलि तालाब में दे दई। थोडी देर में तालाब भरन लगो, तालाब के दूसरे पार में बहू को मायको थो, उने सुनी की तालाब में पानी भर गयो तो मायके वालों के साथ नहावे गई पानी में उतरी, तौ कोई ने उको पांव पकड लओ बहू ने झटक दओ। पर जब दुबारा, तिबारा फिर पांव पकडा तो उखो लगो कि कोई बच्चा है ब धीरे-धीरे खीचे के उपर आयी देखो तो ओई को लडका थो उने पूछी कैसे आये इते। लडका ने सब बतायी तो बहू मायके वालन से बोली हम इते से सीधे घर जैहै, बलि तो उनने जरूर दे दयी गांव वालन की भलाई में, पर सास की हालत ठीक न हूहै।

उतै से लडका लेके घर आयीं किवाड खुलवाए। सास रोन लगी बोली हम अब बहू खौ कैसे मुंह दिखाएं। तब बहू ने कही हम तुमाए नाती खौ लैके खडे हैं तौ उनने दरबाजा खोले तुम ले आयीं। बहू समझदार थी बोली हमें मालूम थी कि गांव भर की भलाई के लाने आप ने ऐसी बलि दई है आप तो हम से ज्यादा अपने नातीयो को चाहती हो ईसे हम मायके वपास नइ गये सीधे ईतै आ गये फिर सास के पॉव पडे आप के आशीश से नाती बच गओ आज गैया बछिया के द्वादशी के दिन इतनो अच्छो काम भओ है उन गौ माता की भी कृपा है जैसो गौ माता ने उन्हें सुखी करो ऐसे सब खौ सुखी करैं।

---oo---

हरतालिका तीज (तीजा)

पार्वती ने शिव खों पाआ, कठिन तपस्या के बाद
ई दिन खों हम भी मनायें, तीजा के रूप में आज

जो त्यौहार भादों के महिना में शुक्ल पक्ष की तीज खों मनाव जात है। जो कोई जा उपास करती हैं, उन्हें पार्वती जी अचल सुहाग देती है। ईमें पानी तक नइ पियो जाय, जो उपास कठिन होत है।

ई त्यौहार में एक दिन पहले मैंदा, बेसन, गुड की पपडियां खाजे, गुजिया बना के रख लो, रात के खावे के बाद आखिरी में सिमैया, और खीरा खा के दतौन करी जात है। दूसरे दिन संजा के जहां पूजा करने हो, पांच खूंट को लीप के चौक पूरके पटा बिछा के उपर मिट्टी के शंकर पर्वती जी बैठा लो उपर फुलहरा डाल लो।

पूजा की थाली-कलश, जल, हल्दी, रोली, चांवल, फूल दूबा बेलपत्री आरती शंकर जी खों जनेउ, वस्त्र पार्वती जी के लाने फरिया, सुहाग की चूडी बिन्दी महवर, सिन्दूर, बेसन के गहने रख लो, चार पहर हवन होत है तो हवन सामग्री अब पैसा पान सुपारी फल गौर गणेश पार्वती खौ जिमावे दूध पपडिया आदि रख लो।

अब संजा के कलश उजियार के गौर गणेश की पूजा करके शंकर पार्वती जी की पूजा करौ, सुहाग को सामान चढा के पकवान चढालो फिर कहानी कहके पहलो हवन कर लो और फिर रात भर भजन कीर्तन करके जागरण करत हैं। करीब तीन-तीन घंटा के अंतर में हवन लगात हैं।

सबेरे चार बजे फिर पूरी पूजा करके पार्वती जी खौ सिन्दूर चढा के सुहाग ल्यो। और अब फुलैरा हिलात भये बिदाई को गीत गा लो। फिर एक दूसरे खौ टीका लगाके कोरा दे के कलश विसर्जन कर लो, फिर पूजा समेट के पास के नदी तालाब में प्रवाहित करके घर आके पहले थोडी सो खीरा खा लो और उपास तोड लो।

कहानी-एक बखत कैलाश पर्वत में शंकर पार्वती जी बैठे रहे उनके ब्याव की चर्चा चली तो शंकर जी बोले पार्वती ने बहुत कठिन उपास करे हैं। बहुत साल तक घने जंगल में भूखे रह के, बहुत साल तक पानी के बीच में खडे

हो के, बहुत साल तक चारो तरफ आग लगा के बीच में बैठ के, बोहत साल बिना अन्न जल के घोर तपस्या करी।

ई बीच में नारद जी ने हिमालय से पार्वती जी के ब्याव की बात विष्णु जी से तय करवायी, ज बात जब पार्वती जी खौ मालूम पडी तो उनने अपनी सखी से कही-कि हम इतने दिन से शंकर जी खौ पावे तपकर रहे हैं और अगर हमाये पिता हमाओ ब्याव विष्णु जी से कर हैं तो हम प्रान त्याग देहैं, तुम हमायी सहायता करौ।

तो उनकी सखि उन्हें हर के कोई दूसरे घने जंगल में लिवा ले गयीं और एक गुफा के अंदर जाके उनने तप करो, तो पहले सप्तऋषि ने उनकी परीक्षा लई, फिर शंकर भगवान ने तीजा के दिन प्रसन्न हो के कामना पूरी होवे को वरदान दओ।

ईके बाद पार्वती जी गुफा से बाहर निकलीं तो उनको पिता उन्हें ढूंढत-ढूंढत उ जंगल में आये, बोले पार्वती इतै कहॉ थी तब उनने शिव जी के दर्शन की बात बतायी, फिर उनके पिता उन्हें घर लेके आये और ब्याव की जैसी रीति रिवाज होत हैं, ओइ के अनुसार उनको ब्याव शंकर जी से करौ।

पार्वती जी अपनी सखि व्दारा हरी गई थीं ईसे ज व्रत को नाम हरतलिका व्रत पडो। जोन भी औरतें जो उपास बड़ी श्रद्धा भक्ति से करहैं उनको सुहाग अमर रेहै।

जै हो शंकर पार्वती जी की

---oo---

श्री गणेश जन्म चतुर्थी

जब लओ जन्म गणपति ने गिरजा आनंद भओ।
बुद्धिविधाता दूखहरता विघ्न विनाशन नाम दओ।।

भादों के महिना में तीजा के दूसरे दिन गणेश चौथ होत है। आज के दिन उपास नइ करैं पर सबेरे दिनइ में गणेश जी को जनम करत है। और आज की रात को चंद्रमा नइ देखने पडै। देखे से कोई चीज को झूठो कलंक लगत है, कहो जात है कि कृष्ण जी खौ आज को चंद्रमा देखे से मणि चोरी को कलंक लगो थे तो ज अजमाई भई धारणा है।

पूजा विधि–भगवान के पास पांच खूंट को लीप के चौक पूर लो, पटा रख के गणेश जी खौ बैठा लो उनको जनम करती बखत नीबू या ककडी के बीच में कच्चो सूत लपेट के गणेश जी साथ में लै के चाकू से नीबू या ककडी काट दो, फिर गणेश जी खौ पंचामृत में स्नान कराके, शुद्ध जल से स्नान कराके, नए वस्त्र पहना दो चंदन, चांवल, जनेउ चढा, के फूल दूबा चढाओ भोग लगाओ, भोग में पंजीरी, हलुआ, अठवाई, फल रख लो, फिर कहानी कह के आरती करौ।

कहानी–एक बखत शंकर पार्वती जी बैठे थे तो पार्वती जी ने शंकर जी से पूछी आप कौन के मुडों की माला पहने रहत हो उनने बतायी– तुमाए मुंडो की माला। बोलीं हम समझे नइ। तो फिर शंकर जी ने कही पार्वती तुमाओ बार–बार जनम होत है और हम अमर है तो हर बार के तुमाए मुड कि माला हम पहन लेत हैं, पार्वती जी ने कही ज तो ठीक बात नइया, कि आप अमर हो, हम नइ है हम भी अमर हूंहै, उनने कही इके लाने अमर कथा एक बार के बैठे में १२ साल तक सुनने पड है बोली हा सुन लै है।

अब शंकर जी ने अपनो डमरू बजा के पूरे जीव जंतु हटा दये और बड़ के पेड़ के नीचे बैठ के पार्वती जी खों अमर कथा सुनान लगे तौ आखिरी हूंका देती बखत उनकी नींद लग गयी, उ पेड़ की डाल पे एक अंडा रहगओ, तो शुक ने भी कथा सुनी और आखिरी हूंका उने दे दओ तो शंकर जी पार्वती जी पे गुस्सा भये फिर समाधि में बैठ गये

पार्वती जी भी रिसा गई और मायके चली गई सबने आदर करो फिर पूछी शिव जी कहां- बोली हम उनसे गुस्सा हो के आये है। पिता ने कही हमें उन से डर लगत है, तुम उनइ के पास जाओ, तौ वे पुत्र कार्तिकेय के पास गईं, उनने भी आदर करके पिता के लाने पूछी, उनने ऐसई कही कि हम नाराज है, वे बोले मां आपको उनइ के पास रहवो उचित है। तो अब वे एक कंदरा में गई,

कथा सुनत में उतै १२ साल को मैल लगोथो, उसे एक पुतला बनाके अपनी उंगली को रक्त छिडको तो लडका उठ के खडों हो गओ, बोले मां आज्ञा दो पार्वती जी ने कही हम गुफा में रेहै तुम हमायी रक्षा करियो।

इतै जब शिव जी की सामधि टूटी पर्वती जी न दिखीं तो मायके गये, नइ मिलीं फिर पुत्र के पास गये, सबने खूब आदर करो पर पर्वती नई मिली तो कंदरा में गये, बिना पूछे अंदर जान लगे तो लडका के रोकवे पे उको सिर काट दओ, इतने में पार्वती जी बाहर आयीं, उनने सब बताऔ पुत्र के बारे में, कहीं अवै तक ओइके सहारे हम इतै रहे, आप उको सिर जोडो, तौ शंकर जी खौ बो सिर तौ नई मिलो उनने एक हाथिनी के बच्चा जीके दो सिर थे, एक काट के इनके धड में जोड दओ, तो जै उठ के खडे हो गये, इनने अपने माता पिता के पैर पडे पार्वती जी भी प्रसन्न हो गयीं ।इन विघ्नहर्ता को नाम गणेश जी रखो गओ ऐसो इनको जनम बताओ जात है। और अपनी तेज बुद्धि बल पै इनकी पूजा भी सब देवताओं की पूजा से पहले होत है।

जय गणेश जी

---oo---

सन्तान सप्तमी (संतान सातें)

सोने या चांदी की चुडी पूज के पहरो,
संतान बेटा बिटियॉ सबको सुख सुमरों।
जो संतान खों देत लंबी उमर की दुआ,
आज नोन न ल्यो गुड के खाओ ७ पुआ।

जो त्यौहार भादों के महिना में शुक्ल पक्ष की साते खो होत है पुत्र पावे के लाने या पुत्र की रक्षा के लाने जो उपास करत हैं।

पूजा विधि-इमें गुड की पपडिया बनती हैं गुड के सात पुआ खाये जात हैं। इन्हें सबेरे से बना के रख लो, आज नमक नइ खाएं दही ले सकत हैं जितने लडका रहत हैं उतनी सोने या चांदी की चूडियां रहती हैं उनमें सात लाइने रहती है। इन्हें गर्म पनी से धोके रख लो।

दोपहर के समय पांच खूट को लीप के चौक पूर के पटा रख लो, उके उपर पान के पत्ता पै चूडिया रख के पूजा करत हैं। कलश उजियार के गौर गणेश की पूजा करके, कच्चे दूध में डुबाके साजे जल से स्नान करा के हल्दी रोरी चांवर फूल धूप दीप पैसा सुपारी चढा लो मीठी पपडियां चढाके कथा करौ।

कहानी-ऐसे अयोध्या में नहुश राजा थे उनकी पत्नी चंद्रमुखी थी, इतइ एक ब्राम्हण थे उनकी पत्नी रूपवती थीं दोनों में खूब दोस्ती रही, एक बखत बे दोनों सरयु नहावे गईं उतै कई औरतें शंकर पार्वती जी की पूजा कर रहीं थीं इनोरन के पूछवे पै बताओ कि संतान सातें की पूजा कर रहे हैं, इसे संतान सुख मिलत है। इन दोनों ने भी उपास करवे को निश्चय कर लओ।

थोडे दिन बाद भूल गई, कछु साल बाद दोनो खतम हो गई दूसरे जनम में रानी बंदरिया भईं ब्राम्हणी मुर्गी भईं, कछु साल में फिर दोनों खतम हो गई तौ अब तीसरे जनम में रानी फिर से राजा पृथ्वीनाथ की रानी बनीं, ब्राम्हणी को ब्राहणइ के घर जनम भओ। ई जनम में रानी को नाम ईश्वरी और ब्राम्हणी को भूषणा नाम रहो। दोनों में फिर दोस्ती रही।

भूषणा खौ पहले जनम की याद रही तौ संतान सातें उपासी रहत्ती तो उके आठ सुदर स्वस्थ लडका भये और रानी भूल गई, तो बहुत साल बाद एक गूंगा बहरा लडका भओ, बो भी नौ साल की उमर में खतम हो गओ, तो भूषणा उनके इतै दुख में बैठवे गई, रानी ने उखौ देखो तो डाह पैदा गई।

जब भूषणा चली गई तो दूसरे दिन उके आठों लडकन खौ बुलाके खावे में जहर दओ, बे न मरे, तो नौकरन से कही पूजा के बहाने उनहें बुला के यमुना नदी में ढकेल दो, तौ भी न मरे, सिर काटवे की कही तौ भी नइ मरे, फिर भूषणा खौ बुलाके अपनी गल्ती मनायी और कारण पूछो कि का बात है, तब भूषणा ने पिछले जनम की संतान सातें उपास की बात बतायी कि हम बोइ करत है। ईसे लडकन को बाल बांको नइ होय। फिर रानी ने भी बड़े विधि विधान से उपास करों तो थोडे दिन बाद एक सुदर स्वस्थ लंबी आयु वालो लडका भओ।

लडका पावे और उनकी रक्षा के लिए लाने जो कोई भी संतान सातें उपासी रहती हैं उनके खूब लंबी उमर वाले और सुख देवे वाले लडका होत हैं। संतान सातें खों मुक्ताभरण उपास भी कहो जात है। पूजा पूरी होवे के बाद मीठी पपडिया को कोरा और आंचर के छोर में सोने या चांदी की चूडी उठा पहनवे देत हैं। भगवान सबके बच्चन की रक्षा करे।

---ooo---

महालक्ष्मी

हाथी पे सवार महालक्ष्मी आयीं, सुरापपडिया भोग लगा लो।
सोला दिया से आरत करो, लक्ष्मी मां की महिमा गा लो।।

ज पूजा क्वांर के महिना में कृष्ण पंक्ष की आठें खौ होत है। ईमें हाथी पै बैठी महालक्ष्मी जी की पूजा करी जात है, महारानी खूब धन धान्य की बढोत्ती करतीं हैं।

पूजा विधि विधान- एक दिन पहले मैंदा, बेसन गुड की पपडिया, खाजे, गुजिया, मैंदा के सुरा, गुड के सुरा बना के रख लो, संकल्प में ब्राम्हन खों देवे छोटे-छोटे चालीस सुरा भी बना लो। अगर सुविधा होय तो मिट्टी के हाथी पै बैठी लक्ष्मी जी, उनकी पूजा करौ, नइ तो आजकल पीतल के हाथी और लक्ष्मी जी की पूजा कर लेत हैं।

पूजा की थाली में हरदी, रोरी चांउर, फूल दूबा, धूपदीप आरती, सोल गांठ को धागा लक्ष्मी जी की फरिया सुहाग को सामान, बेसन के गहने बना के रख लो और आटा के सोला दिया भी बना के रख लो ।

महालक्ष्मी के दिन सूरज निकलवे के पहले दतौन कर के ४०-४० दूबा की दो गड्डी बना के ४१वी दूबा से बांध लो फिर नहावे के बाद उतई एक बड़े बरतन में पानी के शुच्च करत है शुच्च करने को मतलब दोनो हाथ में दूबा एक-एक गडडी लेके पानी में डुबा-डुबा के अपने उपर जय मां लक्ष्मी कहत छीटा डालने है। करीब १०८ बार ऐसो करके शुद्ध मानत हैं।

अब संजा के सोल सिंगार कर के भगवान के पास पांच खूट को लीप के, चौक पूर के पटा रख लो, उमें हाथी पै बैठी महालक्ष्मी जी रख लो, उतई शुच्च करी दूबा रख लो, फिर कलष उजियार के गौर गणेश की पूजा करके, हाथी और लक्ष्मी जी की पूजा करो, बेसन के गहने, सुहाग को सामान चढा के, अठवाई, सुरा, कोरा सब चढाके, पान सुपारी पैसा चढा के कहानी कह लो।

कहानी- हाथी पै बैठी महालक्ष्मी की पूजा तौ सबै दिन से होत आयी है, ज कथा कौरव पांडव के समय की है

एक बार की महालक्ष्मी में सब कौरवन ने मिल के मिटटी को बहुत बड़ो हाथी बनाओ। गांधारी हमेशा कुन्ती खों बुलाउतीं थीं, इ बार घमंड के मार नइ बुलाओ। जब कुन्ती उनके इतै पहुँची, देखो पूजा हो चुकी थी, उतै कोई न थो, उन्हें बड़ो अपमान लगो, दुखी मन से घर आ गई। पांडवन के पूछवे पै बताइ कि उतै पूजा हो गई थी तौ लौट आए।

तो पांडवन ने कही- मां हम आप रवौ सजीवर ऐरावत हाथी की पूजा करा हैं दुखी न हो। अर्जुन ने तुरतई चिट्ठी लिखके बाण से इन्द्र के पास भेजी, कि आजइ अपनो ऐरावत हाथी नीचे भेजो, नइ तौ युद्ध के लाने तैयार हो जाओ, इन्द्र डर गये उनने भी उतै से चिट्ठी भेजी आप रास्ता बताओ हम हाथी कैसे भेजें। अर्जुन बाणइबांण से स्वर्ग से धरती तक सीढियां बना दईं, उसे उतर के ऐरावत हाथी नीचे आ गओ तो कुन्ती ने बड़े श्रद्धाभाव से पूजा करी, उनके सब कष्ट दूर भये।

महालक्ष्मी सबके दूख दरिद्रता दूर करके कृपा करतीं है अब कहानी के बाद १६ सेंगे चांवल लैके १६ बार जो नीचे लिखों हैं कहत भये चढाने है। -

ऊंच नगर पर पाटन नगरी, मंगलसेन राजा, आमोती दामोती दो रानी, बटुक ब्राम्हण कहें कहानीं, हमसे कहते तुमसे सुनते, सुनो सुनो महालक्ष्मी रानी, सोला बोल की एक कहानी

अब आटा से बने १६ दिया से आरती करके चारों तरफ रख देत हैं। फिर लक्ष्मी जी खौ सिन्दूर चढाके सुहाग लेत हैं। और एक दूसरे खौ टीका लगा, के लक्ष्मी जी खौ चढो १६ गांठ को धागा और कोरा देत हैं। पूरी पूजा करके आज एक बार एकइ अन्न खाओ जात है।

।। जय महालक्ष्मी माता की ।।

शरद पूर्णिमा

आंगन में कृष्णा जू की शोभा न्यारी लगै,
सबइ जगहा आज खीर को भोग लगे।
भगवान की सफेद झांकी देख मन हरषै,
शरद पूनो की चांदनी में अमरित बरसै।
क्वांर के महिना की पूनो खौं शरद पूनो कहत हैं।

ऐसो मानत हैं कि आज की पूनो खों चंद्रमा से अमृत की वर्षा होत है और भगवान कृष्ण रास रचात हैं।

पूजा विधान– सबरे नहा धोके भगवान को सफेद वस्त्र पहना के अच्छी तरह पूजा करके सफेद फूल चढाके इत्र लगा दो।

शरद पूर्णिमा में रात के भगवान खों आंगन में या छत में चौकी रख के सफेद कपडा बिछा के बैठात हैं, भगवान खौ सफेद वस्त्र पहना के चंदन रोरी लगा के सफेद फूल चढा दो भगवान खौ खीर को भोग जरूर लगत हैं। थोडी खीर उमें से जाली ढांक के चंद्रमा की किरणें पडें रात भर के लाने रख देत हैं इमें अमृत वर्षा होय। भगवान की आरती पूजा करके रात में भजन कीर्तन करौ।

कहानी– ऐसे एक ससुर बहू थे, बहू रोज सबेरे उठै बिना नहाय धोए रोटी बनाय खवाय। एक बखत ससुर कहन लगे कि बहू औरन की बहुंए सबेरे नहा धो के चौका में आउती हैं बनाती खवातीं हैं, तुम ऐसो नइ करतीं, तो बहू बोली ठीक है हम ऐसइ करहैं, पर आप भी रोज नहा धो के मंदिर जाय करौ फिर आके खाय करौ, बोले ठीक बात है।

दूसरे दिन से बे हरैं एसइ करन लगे। एक दिन ससुरजी खावे बैठ गये, मुह में कौर डाल लओ तबयाद आयी, बोले बहू हम तो मंदिर जावो भूल गये, बहू बोलीं अबै कछु हरजा नइया, हाथ को कौर हाथ में, मुंह को कौर मुह में डालें रहो और साल ओढ के दरशन करयाओ। उनने वैसे करौ।

मंदिर में सब उनखों देखके हंसे, कहें कि आज कंजूस डुकर बब्बा कछु चढावे लाये है, साल के नीचे कछु लयें हैं। बे भगवान की परकम्मा लगात जायं और कहें भगवान हमायी लाज रखो। भगवान ने उनकी लाज

रखी, हाथ को और मुह को कौर सोने को हो गओ उनने हाथ को सोनो चढा दओ आके बहू से बतायी, ब बोली जब दरशन करे भर को इतनो पुन्न होत है तौ उनकी सेवा पूजा को कितनो फल न हूहै। उ दिन शरद पूनो रही, फिर उनने रात के भी खीर बना के बड़ी विधि विधान से पूजा करी। और हमेशा भी खूब भगवान खौ मानत लगे। जैसे सत्यनारायण भगवान ने उनके उपर कृपा करी वैसी सबके उपर कृपा करैं।

---ooo---

आंवला नवमी

ओंरा में रेहेत है विष्णु जी को वास,
जो कोउ करै पूजा, होवे पूरी आस।
दान करे धन नइ घटे, घटत जो शरीर,
कौनउ बुरो न कर सके मिटत सब पीर।

कार्तिक महिना की शुक्ल पक्ष की नंवमी खौ आंवला नवमी केहेत हैं। आज के दिन आंवला के पेड़ की पूजा करी जात है। ईमें भगवान विषणु को वास मानत हैं। इ दिन सोना, चांदी, गाय वस्त्र बगैरह दान करे से बड़े से बड़े पाप भी नष्ट हो जात हैं। ज पेड़ के नीचे भनेज खो कुम्हडा दान करे से, ब्राम्हान खों भोजन कराये से और खुद भी भोजन करे से बहुत पुन्य मिलत है।

पूजा विधि- सबेरे उठके नहाके पूजा की थालीं में हरदी, रोरी चांउर, फूल, फल, आरती करवे कपूर, कच्चो सूत, एक डबुलिया में चिरोंजी शक्कर, एक में मूंगदाल चांवल की खिचडी चढावे, पेड़ के नीचे खावे भी कछु मीठा, नमकीन, पुडी सब्जी अपने लाने को रख लो।

अब ओंरा के पेड़ के नीचे जा के उनकी विधि से पूजा करके कच्चो सूत लपेटत भये सात परकम्मा लगा के कहानी कह लो।

कहानी- ऐसे-ऐसे सेठ सिठानी रहे उनके सात लडका थे, बे रोज एक सोने को आंवला पुन्य करती थीं। जब लडका बड़े भये तो बड़े लडका को ब्याव करौ, बहू आयी, तो सास से कहन लगी कि आप रोज एक सोने को आंवला दान करती हों उत्तो बचाव तौ और कितो पैसा हो जाय, चांदी को आवला दे करो। तो सास चांदी को आंवला रोज दान करन लगी, दूसरी बहू आयी तो बोली रोज की इतनी चांदी बचाव तो कित्तो पैसा होय, तांबे को दे करौ। तो वे तांबे को आंवला दान करन लगी, तीसरी बहू आयी तो उने कही के तांबे को छुडवा दओ, कांसे को देन लगी। चौथी बहू आयी तो कांसे को छुडवा दओ, तौ पीतल को आंवला देन लगीं, पांचवी बहू आयी तौ पीतल को छुडवा

दओ, लोहे को देन लगीं, छटवीं बहू आयी तौ लोहे को छुडवा दओ, बो आटा को आंवला दान करन लगीं। अब सातवी बहू आयी तो ब कहन लगी, कि रोज एक लोई को आटा दान करती हों उत्ते में एक रोटी बनत एक बच्चा को पेट भर जात है न करे करौ तो अब सास ने कही कि जहां हम आटा को आंवला तक दान नइ कर सकें तो हम इतै न रेहैं।

सासससुर घर से निकल गये, जंगल में एक पेड़ के नीचे सो गये ,सबेरे उठे तो देखो सामने एक महल है, खाली है, बे उतइ रहन लगें तिजोडी भरी मिली, रोज सोने को आंवला दान करन लगे पूजा कर के उठें थाली परसी मिलें खायें और सुख से रहें।

इतै जब से सास ससुर गये, घर में गरीबी आ गई, सब लडका बाहर कमावे चले गये, बहुऐ इतै उतै काम करन लगी, एक बखत एक बहू चारा काट के ला रही थी तो प्यास लगी बीच में बोई महल मिल गओ आवाज लगायी पानी के लाने। सास ने सोची कोई मांगवे वाली आयी तो सोने को आंवला लेके बाहर आयीं तो उखो देन लगीं तो बा पहचान गयी उनै खूब पांव पडे माफी मांगी, तो सास ने बहू खौ गले से लगााओ कही बेटा–

पुन्य की जड़ पाताल होत है दान करे से धन कभूं नइ घटै। धरम करे धन न घटै, घट धट जाय शरीर।

फिर सब लडका बहू भी आ गये, सबने माफी मांगी और सब एक साथ सुख से रहन लगे। और आंवला नवमी पूजन लगे। जैसे भगवान ने उनके उपर कृपा करी, ऐसी सब पे कृपा करें।

---ooo---

माघ माह में गणेश चतुर्थी (संकट गणेश)

गणपति जी को पैले ध्यान धरै जो कोय।
संकट बिना सब कारज छिन में होय।।

जा गणेश चौथ माओ क महिना में पूना के बाद आत है। इखो संकट गणेश भी केहेत हैं। संजाबेरा पूजा करके, जब चंद्रमा निकर आय तो उन्हें अरध देके पूजा पूरी होत है।

पूजा विधि-सबेरे उठके नहा धोके तिलकूटा के लडडू बना के रख लो, आज काली तिली को महत्तम है फिर फरार बना के रख लो। संजा के भगवान के पास गोबर से पांचखूंट को लीप के चौक पूर लो, फिर उपर पटा धर के उमें हरदी को सांतियां बना के पान को पत्ता रखों फिर गणेश जी खौ बैठा लो चारों तरफ भी पटा हल्दी से टीक लो। उतइ नीचे भगवान के बांयी तरफ कलश और गौरी गणेश रख लो।

पूजा थाली-हरदी, रोरी, चांउर, फूल दूबा, कच्चो सूत, जनेउ कच्चो दूध, पान, पैसा सुपारी आरती भोग के लाने लडडू सब धर लो फिर कलश उजियार के पूजा करके कहानी कह लो। जब कहानी हो जाय तो आंचर के छोर में कछु सोने की चीज अंगूठी धर के कच्चो दूध साथ में लेके गणेश जी में सात बार घुमाओ, सामने दूध गिरात जाओ और हर बार जो कहत जाओ-

संकट की बारी, कष्ट निवारी, गौरा शंकर खेलें पारी, गनपत विनय सुनै हमारी

फिर आरती करके जब चंद्रमा निकर आय तो पूजा करके अरघ सात बार दे के जो कहत जाओ -

उठो सगोती, उठो भगोती, उठ बारे की मों,
बारे चंदा अरध देत हों, घी को दिया जला।

पहली कहानी-ऐसे-देवरानी जिठानी रहीं। जिठानी के घर खूब पैसा रहो, देवरानी के घर गरीबी रही। ब जिठानी के इतै दिनभर काम करै, जोन पैसा दें उसे अपनो खर्चा चलाती। एक बखत गणेश चौथ पडी तौ देवरानी ने जिठानी के धर दिन भर बनवाओ करवाओ। जब घर जान लगी तो बा बोली

हमें भी कछू दे दो हम भी उपासे हैं पूजा करहैं। तो जिठानी बोली कि-**घर में नइया चना चबेना अम्मां चली भुंजाउन**। अरे काहे आ करतीं हो उपास। उने कही हम तो रहें, तो उखो चांवर को कना दै दओ कही जाओ। उखो बड़ों बुरौ लगो, घर आयी ओइखो साफ करके गुड मिलाके लडडू बना लए, पूजा विस्तारी।

अब गणेश जी ने बूढे के दो रूप बनाये, एक रूप से जिठानी के घर दूसरे रूप से देवरानी के घर पूजा के समय पंहुच गये, देवरानी से बोले माई-माई किवार खोलो, बाहर बड़ी ठंड है घर दूर है, रात इतइ रूक जाएं, उने कही अच्छी बात है रूक जाओ, बे रूक गये थोडी देर बाद बोले माई भूख लगी, देवरानी ने ओई कना के लडडू दे दये, फिर रात क उठे बोले माई हिंगास लगी है, ब बोली स्याने आदमी रात के कहां जे हो इतइ एक कोने में बैठ जाओ सबेरे साफ कर देहैं। बे बैठ गये बोले छरर करें के फरर, बोल छर्र कर दो। ऐसइ उनने चार बखत चार कोने में करो, सबेरे पहर नींद लग गई, जब उठी तो देखो बूढे बब्बा नइया, पर झुपडिया महल बन गई और चारों तरफ सोना चांदी पैसा को ढेर लगो।

अब इ तरफ जिठानी के घरै गये, कही माई किवार खोलो, उने खोले, देखो तो बोली जो कजाने काये आ गओ। उनने रात रूकवे कही, फिर खावे मांगो तौ बेमन से दे दओ। अब रात के जिठानी से भी कहीं हिंगास लगी तो कहन लगी अरे जो डुकरा तो परेशान कर रहो, करौ इई कोने में, कही छर्र करें कि फर्र? कही फर्र कर दो। एसइ चार बखत करो, फिर सो गई सबेरे उठी तो देखो घर टपरिया जैसो रह गओ, चारों तरफ गंदो पडो बुरौ गंधाय। रोन लगी कि जो डुकरा कोन सो टुटका कर गओ।

लडकन खों भेज के देवरानी खौ बुलवाओ, बे घर ढूंढत फिरें, इतने में देवरानी ने उपर से देखो तौ भीतर बुलाके पेटभर खवाओ और दोना भर-भर मिठाई दे के कही जाओ मताई से कहियो अब चाची काम पै न आहें। लडका थोडी दूर गये गणेश जी मीठा छुडा के उनके उपर धूरा डार दई, लडका रोत आ गए। तो जिठानी बोली एक तो ब आयी नइ उपर से लडकन खौ मार दओ, खौ मार दओ, तब लडकन ने बताई ऐसी बात नइया चाची ने खावे दौ मीठा दौ पर बोई रात वाले बूढे ने मीठा छुडाकर धूरा डार दई और चाची के पास अब खूब पैसा हो गओ बे काम में न आहें।

तब जिठानी खुदई देवरानी के पास गईं, आपस में रात की बात करी और खूब रो के गणेश जी खों सुमरो सो वे आ गये, उनने कही जी को जैसो भाव रहो, वैसो हमने दओ, फिर दोइअन ने माफी मांगी, कि अब हम अच्छे रेहैं। देवरानी कहन लगी जिठानी के उपर भी आप प्रसन्न हो जाओ तबइ हम सुखी रह सकत है। तो गणेश जी ने दोनों के उपर कृपा करी। जैसे उनके उपर प्रसन्न भये कृपा करी ऐसी सबके उपर कृपा करें।

दूसरी कहानी–ऐसे-ऐसे मताई बेटा हते, बेटा रोज सबेरे सो के उठे, मुखारी करै, नहाय धोय, लकडियां काटवे चलो जाय औ बेच के जोन पैसा मिलै उमै से एक रूपया की माला मंदिर में गणेश जी खौ चढा दे, एक बखत उकी मताइ गुस्सा हो के कहन लगी कि रोज को एकइ रू. बचाव तो कित्तो पैसा जुड जाय, वो न मानो तो उखो मार दओ, गओ तौ गणेश जी के मंदिर के पीछे जाके सो गओ, रात के गणेश जी आये, बोले बेटा इतै काये परै हो। उने बतायी पैसा की कमी के पीछे, हमायी मताई ने माला चढावे मना करी और हमें मारो है। गणेश जी ने कही डालो सूंड में हाथ, जित्तो पैसा निकालने होय निकालयो। उनै कही पैलै हमें भूख लगी है तो गणेश जी ने उसे कही डालो सूंड में हाथ लडडू निकालो खाओ, डरात-डरात सूंड से लडडू निकले खूब पैसा सोना चांदी, निकार के गठरिया बना के घरै गऔ, मताई ने किवार खोले बोली बेटा गुस्सा में मार दओ थो, तौ तुम कहां गये थे, इमें में का है।

तो लडका ने सब बताओ कि गणेश जी हमाये उपर खुश भये उनने सब दओ। तो मताई कैन लगी के बेटा तुम तो एक रूप्या को नइ पांच को चाहे दस रू. को माला रोज चढाये करो, इतने में गणेश जी आ गये बोले हम पैसा के और माला के भूखे नइया, प्रेम के भूखे हैं उको प्रेम देख के हमने दओ।

गणेश जी ने जैसे उनके उपर कृपा करी ऐसी सबके उपर कृपा करैं।

।।**जै हो गणेश जी**।।

सोमवती अमावश्या

जोन अमावस सोमवार खौ पंडत हे,
खौ सोमवती अमावस कहत हैं।

इदिन दान करवे को, सूरज निकलवे के पहले मौन रहके नहावे को विशेष महत्तम है।

ई दिन पीपल के पेड़ की पूजा करके गुड बताशा चढाओ चाहिए फिर सूत से या मौली लपेटत भये परिक्रमा लगाए से सहस्त्र गैंया दान करे को पुन्य मिलत हैं अगर पीपल के पेड़ की पूजा न कर सकत होंय तो घर में पांच खूंट को लीप के चौक बना के उके उपर तुलसी को गमला रख के उनकी पूजा करके परकम्मा लगा सकत हैं। परकम्मा के लाने १०८ कोई भी चीज जैसे फल मेवा या और कछु भी ले सकत हैं। थोडी चीज लेके और रू. लेके संकल्प करके ब्राम्हाण खौ देदो बाकी कन्याओं खौ दे दो। पूजा के बादज कहानी कहत हैं।

ऐसे-ऐसे सेठ-सिठानी थे, बड़े धर्म करम बाले थे उनके इतै एक साधु भीख मांगवे रोज आते। तो जब बहु भीख देवे जाय तो कहें सौभागवती पुत्रवती भव। और जब बिटियाभीख देवे जाय तो कहें धर्म बाढै गंगा स्नान।

बिटिया जा बात खौ गौर करत रही तौ अपनी मताई से कही। मताई ने साधू से कही उननेकही अरे ऐसी कौनउ बात नइया जवान आय कछु भी निकल जात है, मताई बोली आप सही बताओ का बात है तो बोले बहू के भाग में सुहाग है, बिटिया के सुहाग नइया। तो साधू के पांव पै गिर गई कि जब आप इत्तो जानत हौ तो उपाय भी बताओ सुहाग के लाने का करैं। तो बोले नदी उपार एक सुम्मा धोबन रेहेत है बा बड़ी पतिव्रता है बिटिया सेवा करके उखों प्रसन्न कर ले बा सुहाग दे देहै तो अच्छी बात है।

अब दूसरेइ दिन मताई बिटिया सुम्मा धोबन के घर के पास जाके रहन लगीं, रात होय तो बिटिया उनके घर जाके पूरो चौका बर्तन धीरे-धीरे बिना आहट करे काम करै जोन कपडा दिखांयतो धो दे। गधन की लीद समेट के पूरी जगहा साफ करै, सबेरो होवे से पहले घर आ जाय। धोबन के सात लडका बहुएं रही तो सोचे कि हमायी बहुए कितनी अच्छी हैं सबेरे दिन

नइ निकर पाय और सब काम हो जात है पूछे की कौन बहू करत है काम, तो सब एक दूसरे को मुह देखें कि हम नइ करैं लगत है सास सब काम कर लेती हैं और हमौरन से झूठइया पूछती हैं तो दिनभर सब खूब डर-डर के काम करती थीं।

एक बखत सास से रहो न गओ बोली सही बताओ कौन करत है इतनो अच्छो काम और बोलत भी नइया। तो उनेरन ने सही बताई कि हम नइ करैं। सास खों अब रहाइ न पडी उनने अपनी एक अंगुली में घाव करौ और नमक छिडक लओ रात भर जगीं, जब सेठ की बिटिया ने पूरो करो और जान लगी तो सास ने उकी साडी पकड लई, कि तुम कौन आओ हमाए घर को इतनो काम काये करती हों तौ बाहर खडी बिटिया की मताई आ गई उनने साधु बाबा की बात बतायी कि आप हमायी बिटिया पे प्रसन्न हो जाओ सुहाग दे दो तो धोबन ने कही अरे हमायी सेवा काये करी, हम से बात करतीं तौ हम तो ऐसइ सुहाग दै देते। जाओ अब अपनी बिटिया को ब्याव करौ हम, मढवा के नीचे सुहाग देवे आहैं।

फिर मताई बिटिया घर लौट के आयीं, सेठ जी ने लडका देखो ब्याव रचो, सुम्मा धोबन खौ बुलाओ तो बे जब घर से निकरन लगीं तो अपने सब लडका बहुन से कही हम जरूरी काम से जा रहे हैं इतने बीच में अगर इन खों कछु हो जाय तो ले न जइयो जब तक हम न आ जायं। और चली गई उतै ब्याव में बिटिया खौ अपनो मांग को सिन्दूर सुहाग दे दओ। अब उन्हें चैन न पडी सिठानी से कही अब हम तुरंत घर जेहैं उनने कही कछु खा लो, बोली नइ जोन दे नो होय साथ में रख दो, उतई एक घैला में रख के दओ।

पैदल को जावो रहो, रस्ता में दूसरे दिन सोमवती अमावस पडी। सुम्मा धोवन सोचन लगीं कि सब दिनसुहाग के लने अमावस खौ परकम्मा लगातते, अब काये की फेरी लगांय फिर सोची जो घैला तो है फोडो १०८ थपरिया करीं और पीपल के पेड़ मे परकम्मा लगायी इत्ते में उतै से एक नाउ और एक बाम्हन चले आ रहे थे तो उनने संकल्प करके ५ थपियां ब्राम्हन खौ दे दई बाम्हन ने रू. तो रख लये थपियां फेंक दई। नाउ ने बे थपरियां उठा लई कि हाथ पांव को मैलई छुटावे काम आहै। आगे जाके नदी

किनारे उनौरन ने हाथ मुंह धोए देखो तो वे माटी की खपचियां सोने की हो गईं तुरतई नाउ और ब्राम्हन फिर ओई पेड़ के नीचे गये जहां धोबन ने परकम्मा लगाइ थी। कि उते तो, खूब सारी हैं पर फिर लौटके आके देखी तो अब सोने की न भईं , सत्त तौ एक बार को होत है लालच में नइ होय।

इतै धोबन जल्दी-जल्दी अपने धर गई तो देखो सब लडका बहुत रो भी रहे थे, डर भी रहे थे कहे आप चली गई तो बब्बा खतम हो गये थे, फिर कल से उठ के बैठ गये, हमोरन डर के मारे किवार बंद कर दये वे चिल्लात है, तब धोबन सास समझ गईं कि हमने उतै बिटिया खौ सुहाग दे दओ थो इसे उनके प्रान निकल गये थे, पर जब सोमवती अमावस खौ परकम्मा लगायी अपने सुहाग की भगवान से विनती करी तो उनके प्रान आ गए किवाड खोले वे बोले तुम चली कईं तो इनोरन ने हमें बंदकर दओ, खावे नइ दओ, सुम्मा धोबन ने सब खौ समझाओ बताओ कि सोमवती अमावस खों पूजेसे हमाओ सुहाग अमर भओ है ऐसो सबको सुहाग अमर रहै।

जे हो सोमवती अमावस की

---ooo---

सुहागिलें (हुरैया)

औसान बीबी (अवसान विधि) पूजा

सुहागिलें को अर्थ होत है सुहागिनें और अवासान को अर्थ होत है समाप्ति। तो कोई भी शुभ काम पूरो होवे के बाद ज पूजा होत है। अपन सबसे शुभ काम ब्याव खों मानत हैं, ईसे ब्याव पूरो होवे के बाद अवसान विधि पूजा करी जात है, अवसान विधि को प्रारूप बिगड के औसान बीबी हो गओ तो अब बो एइ नाम से जानो जात है जैसे फलाहार खो फरार के नाम से उजागर हो गओ।

ज सुहागलन की पूजा में कम से कम सात जनी खों बुलात हैं। सात खों एक जोडा मानत हैं, चाहे जितने जोडा खों बुला के ज पूजा कर सकत हैं। ईमें सुहागलन खों जोन मीठा देत हैं वे उतइ बैठ के खाती हैं अगर न खबो तो घर ले जाके चार-पांच दिन के अंदर खुद खाएं या लडकन खों दे सकती हैं बिटियन खों नइ दओ जाए।

पूजा विधि- ज पूजा दोपहर के समय होत है। जोन कोठा में करने होय बीच में लीप के आटा से गोल चौक बना के उपर गोल पटा रखत हैं उमें एक सेंगो खुलो पान रख के उपर छुई के सात डिगला रखत है ऐई के उपर सिन्दूर रखत हैं और उतई सुहागनन खों देवे कांच की चुडियां, बिन्दी के पत्ता और पान के बीडा रखत हैं। पटा के बगल मे कलश रखो जात है। इतइ पास में सुहागनन खों देवे एक एक पाव मीठा थोडे-थोडे भुंजे फूटे चना और गुड रखत हैं। गुड चना, मीठा सब मिला के सवा-सवा पाव हो जाए। इ पूजा में दो बाम्हिन खों जरूर बुलात हैं।

जब सब सुहागिने इकट्ठी हो जाएं तो उन्हें पांव में हल्दी लगा के महाउर लगा के पूजा के चारों तरफ बैठा के टीका लगा दो, फिर गौर गणेश कलश की पूजा करके पटा में रखी छुई सिन्दूर की पूजा करके, सबकी ओली में सवा-सवा पाव मीठा देत हैं। फिर घर की कौनउ स्यानी सुहागन सबसे आशीष के रूप में ओई मीठा में से एक-एक टुकडा मिठाई को ले लेतीं हैं, ई के बाद कहानी कहवो शुरू करती हैं। सब जनी कथा सुनती समय

अपने-अपने गुड चना में से सात-सात चना छीलके साथ में लयें रहती हैं पूरी कथा के बाद बे छीले चना चढा देती हैं।

कहानी- ऐसे-ऐसे एक राजा रानी थे उन्ने अपनी राजकुमारी को ब्याव करो तो खूब दान दायजो दओ, हाथी घोडा तक दये। ब्याव करके बरात लौटन लगी, तो बीच-बीच में रूकत भई जा रही थी तो उन्हें हाथी, घोडा बांधवे खूंटा की जरूत पडी तो राजा खों नाम रखत लगे कि इत्तों दओ पर एक ठइयां खूंटा तक न दओ, कैसे इन्हें बांधिए। ज खबर राजा तक पहुंच गई उन्हें बहुत बुरौ लगो उन्ने पूरे राज में डुंडी पिटवा दई कि आज से कोई के घर में बिटिया न रैहे, जीके इते बिटिया पैदा होय तो उखो मखा दओ जाय।

अब एक बखत राजा शिकार खेलवे गये तो उतइ से परदेश चले गये। उ समय रानी गर्भवती रहीं, उनके बिटिया हो गई तो सबने कही राजा की आज्ञानुसार उखो मरवाओ चाहिए, पर उनके एक राजकुमार भी रहो उने कही हमायी बहन खौ न मरवान देहै धीरे-धीरे बड़ी होन लगी, समझदार होत जाय।

एक बखत बिटिया बाहर खेल रही थी तबई राजा परदेश से लौट के आए तो बिटिया खों देख के बोले- ज कौन की बिटिया है हमायी आज्ञा काहे नइ मानी, तो मंत्रियन ने बतायी- महाराज ज आपइ की बिटिया है, राजकुमार की आज्ञा से ईखौ रखो गई है उ समय राजकुमार कही बाहर गये थे तो राजा ने महल के बाहर तख्ती टंगवा दी दई की राजकुमार ने हमायी आज्ञा नइ मानी ईसे इन्हें देश निकाला दओ जाय। जब राजकुमार लौट के आए और उनने जो पढो तो उल्टै पांव जान लगे, परफिर सोची जीके कारण हमें देश निकला मिल रहो है, उखो मतलब बहन खों तो साथ ले लें, भीतर आये तो रानी रोन लगी पर कछू न कह सकीं चुपचाप बिटिया खों तैयार करो, उके जूडा में हीरा मोती धर दये, फिर राजकुमार बहन खौ लेके बाहर निकल गये।

दूसरे देश में अपनी बहन को मन रमावे चिनैया मुनैया पाल दई और अच्छे से रेहेन लगे। एक बखत राजकुमार बोले हम काम से बाहर जा रये हैं तुम इन चिडियन खों ध्यान से दानापानी दइयो, अगर बे अच्छी हैं तो

समझियों हम भी अच्छे हैं, और इन्हें कछू हो गओ तो समझियों हम ठीक नइयां। फिर बे चले गये तो एक दिना ज दाना पानी रखवो भूल गई तो वे मुरझा गई अब ब रोन लगी तो अवसान महारानी भेषबदल के आयीं और उसे कही तुम रोओ न बेटा, सवापाव चना गुड की सुहागिलें बोल दो, तो तुमाइ चिनैया मुनैया अच्छी हो जेहैं। उने बोल दई तो वे अच्छी हो गई।

अब बिटिया चना भुंजावे कौनउ दिख जाए तो बाहर बैठ गई। इत्ते में एक टांडो वालो निकलो, उने कही भैया हमाये चना भुंजा दो, बो नाही करके आगे चलो गओ, फिर कौनउ दूल्हा की बारात निकली, उनसे कही भैया कोई हमाये चना भुंजा दो, उनने भी नाहीं कर दई, फिर एक मुर्दा वाले निकले उनसे कही भैया हमाये चना भुंजा दो, तो उनोरन सोची ईखो ज्यादा जरूरी हूहै, इसे ज कह रही है, और मुर्दा वाले बोले मुर्दा को उतारो तो कहूं लेनइ है चलो इतई मुर्दा उतार दें। फिर चना भुंजावे चले गये उतै चना भुजत में जैसे- जैसे चटर पटर भये वैसे इते मुर्दा उठ के बैठ हो गओ।

मुर्दा वालन ने देखो तो बड़ो अचम्भो लगो, बोले हम भी चना भुंजा के लेजैहैं सुहागिलें करहैं। उतै ई के पहले जोन बारात निकली थी उनको दूल्हा चक्कर आके गिरो खतम हो गओ, अब बारात वालन ने सोची उ बिटिया ने चना भुंजावे कही थी अपन ने न भुजाए कहूं ईसे न कछु हो गओ हो। लौट के आके बिटिया से पूछी-उने कही सुहागिलें बोल दो उन्ने बोल दई, दूल्हा अच्छो हो गओ, फिर पूरो ब्याव भये के बाद उन्ने भी सुहागिलें करीं।आगे टांडो वालो गओ थो उको भी टांडे बैठ गओ थो फिर उन्ने भी सुहागिलें बोली तो बो भी ठीक हो गओ।

इतै बिटिया की चुनैया-मुनैया भी कूदन लगी, और राजकुमार भी लौट के आ गये। तबई से ज रीत चली है ब्याव पूरो होवे के बाद सुहागिनें जिमायी जाती हैं। ईके अलावा कोई के रूके या बिगडे काम भी औसान बीवी की कृपा से पूरे होत हैं।

----ooo---

सातों वारों की कथाएं
रविवार (इतवार)

सारे जग में उजियारो करत, चारों वेद इनकी महिमां गवत।
ऐसे तेजमय रवि भगवान, सब पे कृपा एक समान।।

जो उपास सबई मन की कामना के लाने बहुत इ अच्छो हैं। सबेरे सूरज निकरवे से पहले उठो और नहाधो के लाल कपडा पहनो चाहिए फिर सूर्य भगवान खौ अरध दे के **श्री सूर्याय नमः दिवाकराय नमः भस्कराय नमः** बोलो चाहिए।

ज उपास में नमक और तेल नइ लओ जाय और सूरज छिपवे से पहले भोजन एक बार करो चहिए। ज उपास करे से मान सम्मान खूब मिलत है और सब प्रकार के रोगखतम होत हैं।

कहानी- ऐसे-ऐसे एक बुढिया थी, हर रविवार खौं गोबर से लीप के नहाधो के सूर्य भगवान खों अरध देके भोजन बनाले, फिर भोग लगा के खुद खात्ती। ऐसो करे से उके घर में कोई चीज की कमी न थी, और न कौनउ दुःख थो।

उके घर के सामने की पडोसन जीके इतै से ब गोबर लात्ती उखौ जो अच्छो न लगो तो ब अपनी गैया भीतर बांधन लगी तो उ रविवार खों बुढिया ने गोबर से नइ लीपो, न भोजन बनाओ न खाओ, ऐसइ सो गई तौ रात के भगवान सपने में आये और कही- माता हम तुमाए ऐसे व्रत से बहुत प्रसन्न हैं ईसे एक गैया देत हैं तो तुमाए सब दुख दूर हो जे हैं। सबेरे उठी तो आंगन में गैया बछिया देखी तो उने बाहर बांध के चारोडाल दओ, भीतर चली गई। सामने की पडोसन ने देखो तौ उखो जलन भई औ देखो

कि सोने को गोबर करो है तो उठा के ले गई अब रोज ऐसइ करै और बुढिया खौ कछु नइ मालूम।

एक दिन शाम खों भगवान ने आंधी चला दइ तो बुढिया ने गैया भीतर बांध लइ सबेरे उठी औ सोने को गोबर देखो तो बड़ो अचरज लगो, फिर रोज भीतर बांधन लगी। अब पडोसन ने देखो, गोबर उठावे नइ मिलत आय तो जलन क मारे राजा से चुगली कर दई कि बुढिया की गैया सोने को गोबर करत है आपके राज में इतनो धन काम आहै, बुढिया का कर है।

दूसरे दिन राजा ने गैया मंगवा लइ बुढिया रोइ चिल्लाई पर कर्मचारियन ने कछु न सुनी, फिर उनै दूख के मारे कछु न खाओ रातभर रोत रही, इतै राजा बड़े खुश हो गये। पर जब राजा सबेरे सो के उठे तो पूरे महल में गोबरइ गोबर पडो, राजा घबरा गये, रात के सपने में भगवान ने कही- राजा बुढिया की गैया लौटा दो, हमने उकै रविवार के व्रत से प्रसन्न हो के दई थी।

सबेरे राजा ने बुढिया खों बुला के उकी गैया लौटायी उसे क्षमा मांगी, और उकी पडोसन खों बुलाकर उचित सजा दई, तो उनके महल की गंदगी दूर हो गयी। उ दिन से राजा ने नगरवासिन खों आदेश दओ कि रविवार सब मन की कामनन खों पूरी करवे वालो व्रत है आज से सब कोई करौ तो उनकी कृपा से जीवन सुखी हो जेहै।

रवि भगवान ने जैसी उनके उपर कृपा करी वैसी सबके पर दया करें।

जय हो भगवान।

--oo--

सोमवार

सोमवार खों भोलेनाथ को उपास करौ।
मन में जोन इच्छा हो, सब पूरी करौ।।

जो शंकर भगवान को दिन कहात हैं। शंकर जी सबसे जल्दी प्रसन्न होत हैं। हर प्रकार की मन की इच्छा पूरी करके सुख सम्पदा देत हैं। जो उपास तीन पकार से रहो जात है। एक तौ एक समय खा के साधारण सोमवार, दूसरो प्रदोष सोमवार, तीसरो सोला सोमवार पूजा विधि एकइसी रहत है। उपास को तरीका अलग-अलग रहत है।

पूजा विधि- सोमवार व्रत में शंकर जी को अभिषेक कारो चइए। उमें क्रम से दूध ,दही, घी, शहद, शक्कर, पंचामृत, गंगाजल, शुद्ध जल से स्नान करा लो, चन्दन, चावल, चढा के कच्चो सूत जनेउ फूल दूब भांग ,धतूरा, बेर, गुलाल और पैसा, पान सुपारी चढा के पूजा कर लो फिर धूप, दीप, नैवेध आरती करके कहानी कह लो।

कहानी- एक गांव में एक सेठ साहूकार थे उनके कोई संतान न थी, शंकर जी की पूजा बड़े श्रद्धाभाव से करत ते। एक बखत उनकी पूजा भक्ति से प्रसन्न हो के पार्वती जी ने शंकर जी से कही- महाराज ई की कामना पूरी कर दो तो शिव जी बोले- पार्वती ज संसार में जो कोई जैसे करम करत है उखो वैसइ फल मिलत है ई के पूर्व जनम के कछु फल बाकी हूंहै ऐइसे पुत्र नइया। पर पार्वती जी के बार-बार कहे से शिव जी बोले- ठीक है हम ईखो पुत्र देत हैं पर १२ साल तक भर जिन्दा रेहै फिर मर जेहै। जै बातें साहूकार ने सुन लईं, पर चुपाचाप पूजा करके उठ गये।

थोडे दिन बाद साहूकार की पत्नी गर्भवती भई फिर एक सुन्दर लडका भओ। पर उको भेद कोई खौ न बताओ। जब बो ११ साल को हो गओ तो उके मामा खो बुला के उनके साथ काशी पढवे भेज दओ और कही रस्ता-रस्ता दान पुन्न पूजा पाठ करत जइयो। अब मामा भान्जा वैसइ करत चले। एक शहर पडो उतै के राजा की बिटिया को ब्याव जोन राजकुमार के साथ हो रहो थो बो एक आंख से कानो थो उनै चिन्ता हो रही थी कि कहूं हमाये लडका खौ देख के कोई अडचन न आ जाय बारात तौ ले के आ गये

थे पर सेठ को सुदर लडका देख के सोची कि इ लडका खो ले जाके ब्याव करो दें और बिदा अपने लडका के साथ करा के ले जायं।

तो उके मामा से पूछी, बे तैयार हो गये। फिर सेठ के लडका खौ दूल्हा के कपडा पहना के ब्याव करवा दओ, बिदा की बखत उखौ दूर कर दओ, पर लडका होश्यार रहो जाती बखत राजकुमारी की चूनरी में लिख दओ कि तुमाओ ब्याव हमाये साथ भओ है हम अब काशी पढवे जा रहे हैं पर तुमायी बिदा जोन राजकुमार के साथ कर रहे हैं बो एक आंख से कानो है। लडका के जावे के बाद राजकुमारी ने अपनी चुनरी में जो पढो देखो तो उनै कह दई कि जी के साथ हमायी बिदा हो रही है बो हमाओ पति नइया। बे तो काशी पढवे चले गये है। तो उके मां पिता ने बिटिया की बिदा नइ की, बारात वापस चली गयी।

उतै लडका ने मामा के साथ काशी जाके पढवो शुरू कर दओ अब उमर १२ साल की हो गयी तौ उ दिन उनै मामा से कही- आज तबियत ठीक नइ लग रइ और भीतर जाके सो गओ थोडी देर बाद मामा ने भीतर जा के देखो तो लडका के प्राण निकल गये मुर्दा पडो है उन्हें बहुत दुख भओ पर यज्ञ अधूरो थो उखो पूरो कर के ब्राम्हन जिमा के रोवो शुरू कर दओ। संजोग से उ समय शंकर पार्वती जी निकले उनने देखो के जो बोई लडका है जीखौ १२ साल की उमर दइ थी पार्वती जी ने फिर शंकर जी से प्रार्थना करी कि महाराज ई के मां बाप तो रो रो के मार जेहै आप ईखौ लंबी उमर दे दो। तो शंकर जी ने उखो जिन्दा कर दओ और चले गये।

अब खुश हो के मामा भान्जा यज्ञ दान पुन्न करत भये लौट के ओइ शहर आये जहां ब्याव भओ थो, राजा ने पहचान लओ अपने महल में बुलाके खूब खातिरी करी और फिर हीरा मोती सोना रथ पालकी दास दासी के साथ अपनी बिटिया की बिदा कर दई।

जब अपने शहर लोट के आये देखो मां बाप दुखी बैठे थे कि शायद अब बुरी खबर मिल है पर मामा ने पूरी बातें बतायीं तो सेठ ने बाहर आके लडका बहू को खूब स्वागत करो। जो कोई सोम्मार व्रत करत है उकी सब कामना पूरी होत है।

जय हो भगवान।।

--oo--

मंगलवार

मंगलवार रहत हनुमान जी को वार।
उनकी दया से सब खुशी मिले अपार।।

जो उपास करे से पाप दोष सब खंतम हो के सब प्रकार को सुख मिलत हे। ईखौ २१ हफता तक करो तो विशेष फल मिलत है ई उपास में नहा धो के लाल कपडा पहन के, पूजा करके लाल फूल चढाओ चाहिए। गेहूं के आटा में गुड डाल के पुआ बना के भोग लगा लो, बिना नमक के एक बार खाओ चाहिए।

कहानी–ऐसे-ऐसे एक बाम्हन पति-पत्नी रेहेत्ते, उनके कौनउ लडका बच्चा न हते, ईसे बड़े दुखी थे। पति रोज हनुमान जी की सेवा पूजा करत्ते। एक बखत जंगल चले गये तो इतै घर में पत्नी हर मंगलवार खों भोजन बना के हनुमान जी को भोग लगाके खुद खाती रहीं, एक बखत कौनउ उपास आ गओ, तो भूल गई, अब उनै सोची कि जब तक अगले मंगलवार खों हनुमान जी को भोग न लगा लेवी तब तक कछु न खाहें। छै दिन तक उने कछु न खओं, सातवें दिन बेहोश हो गयी, उकी ऐसी भक्ति देख के हनुमान जी ने दर्शन दये और कही हम तुमायी भक्ति से प्रसन्न हैं, एक बालक देत है। तो तुमायी बहुत सेवा करहै और अंतर्ध्यान हो गये।

पत्नी सुंदर बालक पाके बड़ी खुशी मई, थोडे दिन में उकौ पति भी घर आ गओ, उनै पूछी जो लडका कौन आय, पत्नी ने सब बात सही-सही बात दई कि जो हनुमान जी ने दओ हमने ईको नाम मंगल रखो है। पति खो जे बातें झूठी लगीं, सोची ज औरत अपनो पाप छिपावे बातें बना रही। एक दिन पत्नी ने पति से कुआं से पानी लावें कही, बो मंगल खौ भी साथ लिवा ले गओ और उखौ कुआं में ढकेल के घर आ गओ, जब पत्नी ने पूछी मंगल कहां है तो कछु बोल न पाओ कि पीछे से मंगल हंसत भओ आ गओ, पति खौ बड़ो अचरज भओ। फिर जब रात सोए तो हनुमान जी ने

सपने में कही कि तुम अपनी औरत खौ गलत समझ रहे हो, बो लडका प्रसन्न हो के हमने दओ है।

सच्चाई मालूम भई तो पति ने हनुमान जी से क्षमा मांगी बे प्रसन्न हो गये पति भी खुश हो गओ और फिर दोनों पति-पत्नी अपने लडका के साथ सुख से रहन लगे।

जो कोई नियम से जो उपास करत हैं कहानी पढत सुनत हैं हनुमान जी की कृपा से उकै सब कष्ट दूर होत हैं।

।।जै हो भगवान।।

बुधवार

जो माने बुधदेव खो, सब काज संवारे।
उन्हें चित में धर के जाओ, कभूं न हारे।।

वैसे तो बुधवार गणेश जी को दिन मानो जात है पर ईमें शंकर जी भी पूजा करत हैं ग्रह शांति के लाने और सब सुख पावे खो जो ब्रत करो जात है। आज के दिन खों जनमो लडका बिटिया की बुद्धि भी तेज होत है। बुधवार खों हरे कपडा पहनवे में और हरी चीज को भगवान को भोग लगावे में वे प्रसन्न होत हैं।

कथा–एक बखत एक अदमी अपनी घरवारी खो लिवावे ससुरार गओ, कछु दिन उतै रहके लुगाई की बिदा के लाने कही आज कर दो। सासससुर ने कही बुधवार को रोज है आज के दिन बिदा नइ होताय, पर बो न मानो तो उनने बिदा कर दई बैलगाडी में जा रये थे तो आधी रस्ता में घरवाली ने कही हमें प्यास लगी है तो वो आदमी लोटा लेके पानी लेवे चलो गओ उतै से आओ देखो तो ओइके जैसी सूरत सकल और बिल्कुल वैसइ कपडा पहने एक आदमी उकी घरवाली के बाजु में बैठो है तो कही कि तुम कौनाव, का कर रहे इते? तो बो कहत है ज हमायी पत्नी आय हम ईसे इतै बैठे हैं दोनों में लडाई होन लगी।

इतने में सिपाही आ गये, असली पति खों पकडन लगे और पत्नी से पूछी तुम बताओ तुमाओ पति कौन आय। ब देखतइ रही गयी दोनों एक जैसे, उखो कछु समझ में न आओ, का बोलें। जो जोन असली पति थो तो वो भगवान से प्रार्थना करन लगो कि भगवान तुमायी ज कैसी लीला है सच्चे खों झूठो बताओ जारओ। तब उपर से आकाशवानी भइ, कि तुमने बुधवार खो बिदा करा लइ, ऐसे बुध भगवान ने ऐसो करो है तो उनने बुधदेव से माफी मांगी, प्रार्थना करी तब वे उतै से अंतर्धान हो गये।

फिर बो आदमी अपनी लुगाई खौ लेके घर आओ, और दोनों जन बुधवार उपासे रेहेन लगे, कथा सुनन लगे तो खूब सुखी हो गये। जो कोई ज कथा पढै, उपासो रहै, उखो बुधवार के दिन यात्रा करे को कौनउ दोष नइ लगै औ सब तरां से सुखी रहेत है।

।।बोलो बुध भगवान की जय।।

---ooo---

गुरूवार (बृहस्तपवार)

पीलो पहरे पीलो खाय, बृहस्पति प्रसन्न।
केला की पूजा करौ, काम हों पूरे सानंद।।

ई दिन ब्रहस्पवेश्वर के रूप में भगवान विष्णु की पूजा होत है। जो उपास करे से घर में सुख संपदा आत है

आज के दिना पीले कपडा पहनो चाहिए। भगवान की पूजा भी पीले कपडा पीलो चंदन, पीले फूल से करो चाहिए। केला के पेड़ में विष्णु भगवान को वास होत है ईसे इ केला पेड़ की पूजा होत है।

उपास करवे वाले खों नमक नइ लओ चाहिए। सिर्फ चना की दाल से बनी मीठी चीज एक बखत लेने पडत है। और आज के दिन लीप पोत के कपडा धोवो, दाढी या बाल बनवावो, सिर धोवो सब मना रहत है।

कथा–एक गांव में एक साहूकार हतो, उके घर में कोनउ चीज की कमी न थी। पर उकी घरवाली बहुत कंजूस रही कभूं कौन उ खों भीख न दे। एक बखत एक साधू बाबा भीख मांगवे आये तो लीप रही थी, उनसे बोली हें अबै फुरसत नइया न देहैं। दूसरे दिन वे फिर आये, बोली हम कपडा धो रये हैं हमें फुरसत नइया न देहैं। तीसरे दिन बे फिर आये बोली हम लडका खों लयें है अवै न देबी। तो साधू बोले ज बताओ अगर तुम फुरसत हूहो तो देहो भीख, तो हम तुमें उपाय बताय, बोली हओ बताओ उपाय, अच्छी बात है।

तो साधु ने कही कि ब्रहस्पतवार खो जब खूब दिन चढ जाय तब सो के उठो, फिर झारसमेट के कचरा कोने में ला दो, रात के बाहर फेंकियो, सिर धोके सब कोइ नहाअ, घर के आदमिन से कह दइयो कि ब्रहस्पतवार खों दाढी बनावाये बाल बनावाएं तुम भटी लगाके खूब कपडा धो। ऐसो लगातार सात ब्रहास्पतवार कर हो तो फुरसत हो जेहो।

अब जैसी-जैसी साधू बाबा ने बतायी उनै वैसइ करवो शुरू कर दओ, तो बस थोडेइ दिन में बहुत गरीबी आ गई, दोनो टेम खावे तक न जूडै। दो चार महिना बाद बेई साधू बाबा फिर आए भीख मांगी। तो ब रोन लगी, बोली अब कछु नइयां तो फुरसत बैठे हैं उनके पांव तरै गिरी, अब हमें कछु ऐसो उपास बताओ कि फिर से खूब धन पैसा हो जाय हम आप खों कभूं खाली न लौटावी।

साधू बाबा खों दया आ गयी उनने की अब ध्यान से सुनो, रोज सबेरे सूरज निकरवे के पहले सो के उठे करौ और खास कर ब्रहास्पतवार खों झार समेट के कचरा सबेरे इ फेकों, घर में कोई बाल न बनावायें, दाढी न बनाएं, नाखून न काटें, भोजन बना के चूल्हे के पीछे न रखे, कपडा न धोए, सिर न धोएं। ठीक शाम के समय भगवान को दीपक जलाओ, भूखे खों अन्न पानी दो जहां तक बन सके तो पीले इ कपडा पहलो, हो सके तो सात ग्यारा ब्रहस्पतवार पीला खाके उपास करो, तौ सब धन संपदा आ जे हैं फिर जैसी जैसी साधू बाबा ने कही उने ठीक वैसइ उपाय करो तो बहुत जल्दी घर में पहले जैसो धन पैसा हो गओ। करो तो बहुत जल्दी घर में पैसा हो गओ।

जो कोउ इन सब बातन खों मानत हैं तो भगवान ब्रहस्पति देव विष्णु जी की कृपा से सब प्रकार को सुख मिलत हैं

।।ज हो ब्रहस्पति भगवान की।।

--oo--

शुक्रवार

वैसे तो इ दिन के इष्ट शुक्रचार्य कहे जात हैं। पर शुक्रवार खों वैभव लक्ष्मी की पूजा और संतोषी माता की भी पूजा होत है। सबकी पूजा की विधि और कहानी अलग अलग रहत है। इते शुक्र देवता की मानता मनौती की कहानी बतायी है।

कथा– एक गांव में एक साहूकार को लडका और एक कायस्थ के लडका की खूब दोस्ती रही है। कायस्थ की पत्नी घर में रहत्ती और साहूकार के लडका की पत्नी को गौना न भओ थो। दोनों दोस्त दिनभर साथ में काम करत्ते, रात के जब घर लौटन लगे तो कायस्थ कहै- हम तो घर में आराम से सो हैं तुम जाके ऐसइ पर रहियो। एक बखत साहूकार वाले ने पूछी तुमायी इ बात को मतलब का है तो उने बतायी हमायी पत्नी घर में है तो हमायी राह देखत है खाना परस के, बिस्तर उन्ना बिछा के हमाओ अच्छे से सब काम करत है, तुमाओ तो तुमायी मा बहनें ऐसइ परस देती हैं फिर तुम कहूं भी सो जात हौ। ऐइ हमाये तुमाये में अंतर है।

दोस्त की ज बात सुनके साहूकार के लडका खों बड़ो बुरौ लगो। घर जाके अपनी घरवाली खों लिवावे जावे की तैयारी करन लगो, सबने मना करी कि जब शुक्र उदय हूहै तब सगुन सात से बुलावी बो न मानो, चलो गओ लिवावे।

ससुरार में अचानक दामाद खों देख के आवे को कारण पूछी तो उने कही हम लिवावे आये हैं तो उनोरन ने भी मना करी कि अवै शुकवा डूबो है इसे बिदा न करवी। पर लडका न मानो तो बिदा कर दई। बैलगाडी में जा रहो थे, रस्ता में बैल बैठ गये, उठवइ न करैं, बड़ी मुश्किल में उठे और चले।

आगे गये तो रस्ता में डाकू आ गये, जोन धन पैसा रहो सो लूटके लै गये, बड़े परेशान होत भये चले कि अब अपनो गांव आवे वालो है, पर

जो का, नदिया के उ पार गांव है, और इते देखो तो नदिया में बाढ आ अगई, पुल के उपर तक पानी आ गओ, अब एक दो दिन उतई पडे रहे ओइ बीच उनके पास एक साधू महात्मा आ आये बोले भाई इतै काये पडे हो तुमौरे ? तो बो लडका बोलो महाराज हम पत्नी की बिदा करावे गयेथे, तो इतनी परेशानी में फंस गये। महात्मा जी बोले- तुमने गलत समय बिदा करायी जब शुक्रवा उदय होत तब सगुन सात से बिदा करानी थी, ऐई से इतनी परेशानी आई।

फिर साहूकार के लडका ने मनइमन शुक्र देव से क्षमा मांग के उन्हें मनाओ, कही आगे से ऐसो कभूं न करवी। तब शुक्र देव ने प्रसन्न हो के अपनी लीला हटायी और फिर बे दोनो पति पत्नी घर वापस आ गये और सुख से रहन लगे।

शनिवार

सब ग्रह देवन में, शनि देव की महिमा भारी।
पीपर में वास इनको, पूजो तो टारैं विपदा सारी।।

ई दिन शनिग्रह खो प्रसन्न करवे शनिदेव की पूजा करी जात है। शनि देव खों काले तिल, कालो कपडा, तेल, काली उडद जो सब बहुत पसंद है।

कथा–एक बखत सूरज, चंदा, मंगल, बुध, ब्रहस्पत, शुक्र, शनि, राहु ओ केतु इन नौ ग्रहन में आपस में झगडा हो गओ, बे कहें मैं बड़ो हो,तो दूसरे बे कहें मैं बड़ो हो, उनको झगडा न सुरझो, सो गये सरग के राजा इन्द्र पास, बे भी इनोरन की बात सुनके घबरा गये बोले तुम सब नीचे धरती में राजा विक्रमादिव्य से झगडा सुलझवाओ तो वे नेचे आए। विक्रमादिव्य के सामने अपनी बात रखी, तो उनने सोची कीखों बड़ो बतांय, कीखो छोटो बतांय। उनने एक काम करो सोनो, चांदी, कासो, पीतल, शीशा, रांगा, जस्त, अभ्रक, लोहा इन नौ धातुअन के नौ ठइयां आसन बनवाए और उन्हें क्रम से जैसे सब से पेले सोना औ सबसे पीछे लोहे के आसन, बिछवा दये और कही जोन को आसन सबसे पेले बे सबसे बड़े औ जिनको आसन सबसे पीछे बे सबसे छोटे हैं।

तो बस शनि देव ने समझ लओ कि हमें राजा ने छोटो बता दओ। सब देवता खुशी से लौटे, शनिदेव में गुस्सा में, बोले राजा अबै तुम हमयी हस्ती नइ जानत, सूरज एक राशि पे एक महिना, चंद्रमा सवादो महिना, मंगल डेढ महिना, ब्रहस्पत तेरा महिना, बुध और शुक्र एक महिना पर हम एक राशि में ढाई या साढे सात साल तक रेहेत है हमने राम और रावण तक खौ नइ छोडो अब तुम्हें भी बतेहैं और गुस्सा हो के चले गये।

कछु दिन के बाद जब राजा खों साढे साती की दशा आयी तो शनि देव भेष बदल के खूब सारे घोडा बेचवे आए तौ राजा अच्छो देख के जैसइ उपै बैठे, बो घोडा जोर से भगो और जंगल में राजा खों गिराके अंतरधान हो गओ अबवे जंगल में भूखे प्यासे भटकत रहे, इत्ते में एक ग्वाल दिखो

उने पानी पिवाओ, शहर को रस्ता बताओ, तो राजा ने खुस हो के अंगूठी दे दइ और शहर खों गये।

उतै एक सेठ की दूकान पै बैठ गये अपनो नाम बीका बताओ, उ दिन सेठ की बिक्री अच्छी भइ तो उन्ने सोची जो आदमी भागवान है अपने घर लिवा ले गये, भोजन कराये, उ कोठा में खुटिया में नौलखा हार टंगो थो बो खुंटिया निगल गई तो इनके उपर चोरी लगायी गयी, उ शहर के राजा के पास ले गये उन्ने विक्रमादित्य राजा के हाथ पांव कटवा देये। अब उन्हें एक तेली लिवा ले गओ, उतै राजा अपनी जबान से बैल हांकन लगे ऐसइ समय निकलन लगो।

एक बखत बरसात को समय थो, रात के राजा मल्हार राग गा रहे थे। उ शहर की राजकुमारी ने अपने महल से इनको गाना सुनो, तो बस उ राग में उको मन भर गओ उने अपनी सहेली खौ भेजो, कि जाओ पता करौ जो कौन गा रहो है तो ब पता करके आयी कि तेली के घर में कोई हाथपांव नइयां जीके बो गा रहो है। बस राजकुमारी ने मन में सोच लइ के हम ओई के साथ ब्याव करहैं।

सबेरे देर तक राजकुमारी न उठी, तो राजा रानी आये उठावे, ब बोली हमने मन में ठान लओ है कि रात के जाने गा रहो थो हम ओइ के साथ ब्याव करहै। राजा रानी ने खूब तरां से समझाओ, पर ब ना मानी तो राजा ने गुस्सा में कह दइ कि हम अवइ उ के साथ ब्याव कर देहैं। तौ उन्ने तेली के घर में खबर भेजी के तुमाए घर में जोन चौरंगिया है उके साथ हमें अपनी राजकुमारी को ब्याव ऐइ समय करने है तुरतइ तैयारी कर लों तेली घबरा गओ कि कहां जे राजा, हम तेली ओर जो चौरगंगिया ,राजा खौ का हो गओ पर राजा की आज्ञा मानने पडी। राजकुमारी को उनके साथ ब्याव हो गओ, रात के बे महल में सोए।

आधी रात के शनिदेव ने राजा खों दर्शन दये, कही-राजा तुमने हमें छोटो बताके कित्ते दुख उठाये। राजा ने क्षमा मांगी, तो उनने प्रसन्न हो के हाथ पांव दे दये। तब राजा ने प्रार्थना करी, कि जैसो दुख आपने हमें दओ, ऐसो कोइ खों न दइओ। शनिदेव बोले ठीक है तुमाई प्रार्थना हमें मंजूर है

हमायी कथा जो कोई कहै सुनै और चीटियन खो आटा डालै उखो हमायी दशा हमें कोई दुख न हूहै,फिर अपने धाम चले गये।

सबेरे जब राजकुमारी की आंख खुली उनै राजा के हाथ पांव देखे तो अचम्भो भओ। फिर राजा ने सब सच्ची बतायी कि हम उज्जेन के राजा विक्रमादिव्य हैं, राजकुमारी बहुतइ ज्यादा खुस मई।

ज खबर सबेरे सब खों मिली तो सबइ खुश भये, कि भगवान ने कित्तो अच्छो करो। अब ज जा खबर उ सेठ खों मिली तो बे भी आए विक्रमादिव्य के खूब हाथ पांव जोड के माफी मांगी कि हमने आपके उपर झूठो दोष

लगाओ उन्ने समझायी ईमें तुमायी गलती नइया, हमाए उपर शनि की दशा दशा थी सेठ ने कही हमें तो तबइ शांति मिल है जब आप हमए घर चल के भोजन कर हैं। राजा बोले ठीक है अब उनके घर में जब भोजन कर रये थे तो सबने देखो कि खुंटिया हार उगल रही थी।

फिर सेठ ने प्रार्थना करी कि हमायी श्री कंबरी नाम की बिटिया है उके साथ आप ब्याव कर लो। तो राजा ने ब्याव कर लो। फिर दोनों पत्नी खों लेके और दोनों जगहा को दान दान जो लेके अपने नगर वापस आए तो पूरी प्रजा ने नगर सजा के उनकी अगवानी करी रात के खुशी में दिया जलाए।

दूसरे रोज राजा अपने सिहासन पै बैठे, सब नगर वासियन से कही शनिदेव सब देवतन में बड़े हैं, हमने इन्हें छोटो बताके खूब दुख उठाये। जो कोई शनिश्चर की कथा पढै सुनै और चिटियन खों आटा डाले उखो कौनउ प्रकार को कष्ट न हूहै। और शनिदेव की कृपा सबके उपर बन रेहै।

।।जय हो भगवान शनिदेव की।।

---ooo---

बन्देली भाषा में कविता
पेड़ का महत्व

झाड़ पेड़ हम सबखों होंय सहाय।
जड़ पत्ता फल डाली सबई काम आय।
ज तुलसी है कृष्ण प्यारी,
ईकी महिमा बहुतै न्यारी।
तुलसी बड़ो काम को पौधां
सर्दी खांसी में बनो औषधा।
पीपल पेड़ में ब्रम्ह बसत,
इन्हें पूजे शनि दशा कटत।
ईखो काटे लगत है पाप,
ऐसो है सब खों विश्वास।
नरियल पेड़ को बड़ो है काम,
पूजा रचा में श्री फल नाम।
झाड़ू रस्सी बोरी सब इसे बनत,
ईसे पानी, तेल भी खूब मिलत।
औंरा पेड़ में भगवान को वास,
अक्ति, नवमी में पूजा खास।
दवाइन में बनो सिरमौर,
बाग बगीचन में ईको ठौर।

बड़ पेड़ छाया घनी खुशी देत,
वट पूजा मन चाहो फल देत।
पूजा में आमटेरी, वंदनवार महत्तम,
आम सब फलन को राजा उत्तम।

जो बेर वृक्ष बदरी वृक्ष कहाओ,
सबरी ने बेर को नाम उठाओ
वन में सीता ने लगाओ रामफल,
राम ने लगाओ तो उपजो सीताफल।
नीम में बसीं शीतला मात,
करओपन से रोग भगात।
जामुन पेड़ के फल मधुमेह भगांय,
रथयात्रा में जगन्नाथ जू भोग लगांय।
गुरूवार खों विष्णु केला पूजत,
प्रभु सेवा में जो मंगल पेड़ रहत।
बांस वंश में शुभ मानत,
टुकनी सूपा पंखा बनत
पेड़न में रंग बिरंगे फूल खिलत,
पूजा में जे सब देवन, खो चढत,
जे पेड़ सब तरां की सब्जी फल देत
मनुष तन से कार्बन लै अक्सीजन देत।
ज धरती में पेड़ होत बड़ो महान,
ईखों कबहु न काटियो इसे जीवन प्रान।
सब कोउ खौ हम देत कछु सुझाव,
अपनी जिन्दगानी में कछु पेड़ लगाव

बेटी को सीख

प्यारी लली फूलियो-फलियो, सदा सुहागल रहियो मोरे लाल।
सासरे जाके धीरज धरियो मन में, न घबरइयो मोर लाल।
जो बेटी हम सीख देत हैं, चित धर सुनती रहियो मोरे लाल।
सास ससुर पग पूजा करियो, पति की सेवा करियो मोरे लाल।
जेठ को अपने पिता समझियो, कबहूं न उत्तर दइयो मोरे लाल।
देवर को अपने भाई समझियो, सदा हंसाती रहियो मोरे लाल।
देवरानी -जिठानी ताना सुनियो, उनही के काम करइयो मोरे लाल।
ननद को अपनी बहन समझियो, उनकी चुगली सुनियो मोरे लाल।
बूढी-बड़ी पडोसन आवें, उनही को शीश नवइयो मोरे लाल।
पहले उठियो पीछे परियो, सबसे पीछे खइयो मोरे लाल।
अंगनामें बेटी झाड़ू लगइयो, व्दारे में दीपक जलइयो मोरे लाल।
राम कृष्ण को मस्तक नवइयो, तुलसी को जल चढइयो, मोरे लाल।
जितनो पैदा करके ल्यावें उतने में गुजर चलईयो मोरे लाल।
गहने गुरिया की हठ न पकडियो, उनई को जिय न जरइयो मोरे लाल।
व्दारे में कोई भिकारी आवे, कबहूं न झर झर करियो मोरे लाल।
मात-पिता की लाज को राखियो, कबहुं न आंसू बहइयो मोरे लाल।
अपनो घर बेटी ऐसे चलइयो, जैसे सीता चलाओ मोरे लाल।
पतिव्रता नारी को जीवन, पति की सेवा में जेहै मोरे लाल।
प्यारी लली फूलियो फलियो, सदा सुहागल रहियो मोरे लाल।।

मोबाइल

जोन दिना से आओ मोबाइल, काम हो गये ढीले ढाले।
कछु कहौ कौउ बोलतइ नइया, जैसे जीभ पड गये छाले।।
सबेरे उठतइ आंखे मीडत, हाथ मोबाइलै में जात।
वाटसेप और फेसबुक में, गुजारत हैं दिन रात।।
और तो सब ठीकइ आय, खावे तक की सुध ने रहेत।
मोबाइलै संग हंसने बोलने, पास बैठो मुंह देखत।।
छोटे बच्चा तक छोड खिलौना, ओइमें चिपके रेहत
बड़े बूढे सोइ चित लगाके, थोडी थोडी में देखत रेहत।।
तुमने का खाओ का पहरो, मोबाइल से होत उजागर।
तनातना सी बात, खिंचती फोटो, बातें जांय घर बाहर।।
पर हॉ अच्छी बातन में देखों, तो अच्छो सोइ लगत।
चलावो भर बनन लगै, तो दुनिया भर को ज्ञान भरत।।
आज को जमानो ऐसो, कि ईके बिना कामइ नै बनत्।
गरीब हो या अमीर बेलेन्स डरवा के रखने पडत।।
मोबाइल है तो न अखबार चाहुने, न मनरंजन।
टी.वी तक खों फेल कर दओ, जो है सबके हाथन।।

सुनै न सरकार

बोट डार डार के हमने इनखां कुर्सी में बैठाओ,
अब तो कछु भी सुनतइ नइयां बात हमायी,
कैसी है सरकार। 'कैसी है सरकार हमायी ज।'

१. पहले तो हाथ जोड-जोड के, बातन में खूब लहा पटा के,
हमसे वोट डरा लई, अब नइया कछु दरकार।
सुनतइ नइया बात हमायी, ज कैसी है सरकार।।

२. सडकन में जहां-तहां के पाइप टूटे,पानी डबरा सो भर जाय,
छपर-छपर करके सब कोउ निकरै, छीटा मारे कार।
सुनतइ नइया बात हमायी, कैसी है सरकार ।। ज कैसी

३. देहातन में घर-घर नइया रे संडास
बाहर खों बे जांय,गंदो सब जगहा परो है, मरजादा डूबी नार।
सुनतइ नइया बात हमायी कैसी है सरकार।। ज कैसी

४. गांवन में सडकें उबड़ खाबड़, लोग लुगाई परेशान,
भरोसो दैके कच्चो माल लगांय, जे ठेकेदार।
सुनतइ नइया बात हमायी, कैसी है सरकार।। ज कैसी।।'

५. मेहनत मजदूरी करके अन्न,उपजाएं जे किसान,
उमें भी दुनिया भर के टैक्स की होवे उनखां मार।
सुनतइ नइया बात हमायी' कैसी है सरकार हमायी ज।

६. गलिन-गलिन में डी.डी.टी. न छिड कें, मच्छर की भरमार,
भर गर्मी में पानी बिजरी काटें, कितनउ करौ गुहार।
सुनतइ नइया बात हमायी 'कैसी है सरकार हमायी ज', कैसी है सरकार।।

बलम परदेश

तारो लगांय कुची लैं गये, बलम परदेश चल गये
न कछु कह गये, न कछु सुन गये
कौना भरोसे हमें छोड गये, बलम परदेश चले गये।।
तारो...

हाय हाय करती मैं बागों में बैठी
माली ने फूलन को बान छोड दओ, बलम परदेश चले गये ।।
तारो...

हाय हाय करती कुइयॉ में बैठी
ढीमर ने पानी उडेल दओ, बलम परदेश चले गये।।
तारो...

हाय हाय करती मैं तालों में बैठी
धोबी ने कपडा फटकार दओ, बलम परदेश चले गये।।
तारो...

हाय हाय करती मैं महलों में बैठी
राजा ने सेज बुलाय लओ, बलम परदेश चले गये।
तारो लगांय कुची ले गये, बलम परदेश चले गये।।

राम लखन तपसी

राम लखन तपसी दोई भैया, साधु बने चले जांय मोरे लाल।।

१. चलत चलत साधु तालो लो पहुंचे, धोबिन ने पूछी है बात मोरे लाल।
तनक तो छैया विलमा लो रे साधु, कपडे धुले पहने जाओ मोरे लाल।
कोई के धुले कपडा हम न पहनवी, साधु धरम चलो जाय मोरे लाल।
राम लखन...

२. चलत चलत साधु बागों लो पहुंचे, मालिन में पूछी है बात मोरे लाल।
तनक तो छैंया विलमा लो रे साधु, गजरा गुहे पहने जाओ मोरे लाल
कोई के गुहे गजरा हम न पहनवी, साधु धरम चलो जाय मोरे लाल
राम लखन...

३. चलत चलत साधु कुअलों लो पहुचे, कहरिन ने पूछी है बात मोरे लाल
तनक तो छैया विलमा लो रे साधु, पानी भरो है पियें जाय मोरे लाल।।
कोई को भरो पानी हम न पीवी , साधु धरम चलो जाय मोरे लाल।
राम लखन...

४. चलत चल साधु महलों लो पहुंचे, रानी ने पूछी है बात मोरे लाल।
तनक तो छैंया विलमा लो रे साधु, सेजें लगायीं है बैठो मोरे लाले,
कोई की सेजे हम न बैठवी, साधु धरम चलो जाय मोरे लाल
राम लखन तपसी दोई मैया, साधु बने चले जांय मोरे लाल।।

पति पत्नी में नोंक-झोंक

औरत-तुमाए इते आके बलम हम तो पछताने,
कैसे के कटहै उमरिया राम जाने।
आदमी-मायके की शान न बताओ प्यारी धनिया,
हमसे न खरी कहवाओ प्यारी रनिया।
औरत-हमरे बाबुल घर कंचन अटरिया,
कंचन अटरिया और चंदन किवडिया,
तुमायी जा टपरिया, तुम्हायी जा टपरिया छै
जगहा से चुचानी, कैसे के कटहै उमरिया राम जाने।
तुमाए इते...
आदमी-तुमका जानो कैसी होती है अटरिया,
ब्याहन गये ते तब देखी फूटी टपरिया,
हमाये महल पाके, हमाये महल पाके न इठलाओ
प्यारी धनिया, कैसे के कट है उमरिया राम जाने।
तुमाए इते....
औरत-मयके में पहनत रही मखमल के उन्ना,
उन्ना और सुन्नई सुन्ना, तुमाए इते आके तुमाए
मुदरी तलक खौ ललाने, कैसे के कटहै उमरिया
राम जाने ।। तुमाए इते....
आदमी-मायके में पहरत रही फटे चिथे पोलका,
तीस रू. वाले और सस्ते से मोल का।
अब गोटा जरी की, गोटाजरी की साडी न इतराओ
प्यारी धनिया। कैसे के कट है उमरिया राम जाने।
तुमाए इते ....
औरत-हमरे बाबुल घर नौकर चाकर,

पलका परी पछताती यहां आकर
तुमाए काम कर के, तुमाए काम कर कर के हम तो
उकताने। कैसे कट है उमरिया राम जाने।
आदमी-भोरई से करत रही कंडा पथ उआ,
ले ले घुटउआ रोज बीनत रही महुआ
हमायी सेज पाके, हमायी सेज पाके नइठलाओ
प्यारी धानिया। कैसे के कट है उमरिया राम जाने।
औरत-मायके में खवत रही दूध मलीदा,
दूध मलीदा और संध्या के खीर
तुमाए इते लपटा, तुमाए इते लपटा खाके तो
उकताने। कैसे से कट है उमरिया राम जाने।
आदमी-मयके में खावत रही दूध महेरी,
दूध महेरी और संध्या के डुबरी।
इते माल खाके इते माल खा के न गर्राओ
प्यारी धनिया कैसे के कट है उमरिया राम जाने।
तुमाए ते आके बलम हम तो पछताने।
कैसे के ....

होरी

होरी आ गई री, आ गई आ गई होरी आ गई री।
जो आओ ठिठौली को त्यौहार

१. फागें गाओ झूमो, करौ रंग गुलाल की मार
होरी आ गई री ।।

२. ए गुइयां ज होरी लगत बड़ी सुहानी,
धुतिया गीली हो गयी, डरो रंग को पानी ।
होरी आ....

३. होली की हुरदंग में न अपनो मन उरझइयो,
कोई डारै गीलो सूखो रंग, मीठे से समझइयो।
होरी आ....

४. बुराई सबकी डार दई होरी की आगी में,
अच्छो करौ लुभाओ अब अपनी बानी में।
होरी आ....

५. राधा कृष्णा ने खेली होरी प्रेम बनावन में,
सब खों गले लगाव मीत बनाव होरी पावन में।
होरी आ गई री, आ गई आ गई,
होरी आ गई री, आ गई री।

नौ दुर्गा रूप

नौ रूप में आयीं दुर्गा मैया,
सुनवे सबकी पुकार, तुमायी होवे जे जैकार।
लाल चुनरिया लालइ फरिया,
सुंदर सो सोला सिंगार, तुमायी होवे जै जैकार।
पहले रोज शैलपुत्री बन आयीं,
करवे सृष्टि को विस्तार, तुमायी होवे जै जैकार।
दूसरे रोज ब्रम्हचरिणी बन आई,
दैवे सबखो शाक्ति अपार, तुमायी होवे जै जैकार।
तीजे रोज चंद्रघटाबन आईं,
हाथ गदा त्रिशूल तलवार, तुमायी होवे जै जैकार।
चौथे रोज कुष्मांडा बन आईं
करवे सबको उपकार, मॉ तुमायी होवे जै जैकार।
चौथे रोजकष्मांडा बन आईं,
करवे सबको उपकार, तुमायी होवे जै जैकार।
पांचे रोज स्कंदमाता बन आईं,
करवे भक्तन खों प्यार, तुमायी होवे जै जैकार।
छटें रोज कात्यायनी बन आईं,
शेरन पै होके सवार, तुमायी होवे जै जैकार।
सातें रोज कालरात्रि बन आईं,
करवे दुष्टन को संहार, तुमायी होवे जै जैकार।
आठें रोज महागौरि बन आइं,
इनकी महिमा है अपार, तुमायी होवे जै जैकार।
नवें रोज सिद्धात्री बन आईं, जो कोई द्वारा तुमाए आय,
करती सबको बेडापार, तुमायी होवे जै जैकार।

गांव की नारी

उठो गुइयां हो गओ भुंसारो
चहकन लगीं चिडिया दाना डारो।
उन्ना समेट के घर लीप डारो,
झार के द्वारो उरेन तुम डारो।

रंभाती हैं गैंया डार दो चारो,
निकर आयीं किरणें दूध दुह डांरो।
बासन डरै हैं हाथ फेर लइयो,
पीवे को पानी कुआं से भरियो।

चलो कपडा धोवे चलें तलैया,
मछरिन को देहें आटा की गुलिया।
लौट के आओ सो तुलसा ढारियो,
पूजा कर रोटी रूचरूच बनाइयो।

जिमा खवा के चौका करियो,
घर के बचे सब काम संवारियो।
फिर खेत जाय मेडन में पानी डारियो,
सजनसंग सब बारी संभरियो।

सांझ परे सो दियल जलाइयो,
ब्यारी करा के उन्ना बिछाइयो।
सबमें प्रेम प्रीत को रस डारो,
हंसी खुशी से दिन खों गुजारो।

--oo--

नाम - श्रीमती उमा सुहाने।
जन्मतिथि - २४दिसम्बर १९५३,
विवाहतिथि - ०६ मई १९७४,
शिक्षा - बी.ए., क्राफ्ट-पेन्टिग डिप्लोमा
व्यवसाय - भगवती कला केन्द्र की संचालिका
रूचि - लेखन, सभी क्राफ्ट वर्क रंगोली, आदि
पारिवारिक परिचय -
पिता - श्री चंद्रिका प्रसाद मोर कटनी
माता - श्रीमती सरोज मोर।
भाई - श्री कैलाश नाथ, शरद चंद्र
बहन - डॉ.मनोरमा
पति का नाम - श्री गोविन्द दास सुहाने
संतान - अभिषेक-ज्योति
बेटा-बहू - आनंद -आभा, आशीष-स्नेहा
बेटी-दामाद - श्वेता-प्रकाश सेठ जबलपुर
सामाजिक - पूर्व संगठन मंत्री कटनी नारी-मंडल
साहित्यिक परिचय - हिन्दी लेखिका संघ सदस्य, वैश्य महासभा सदस्य ।
सम्मान - अंतरा स्वाभिमान सम्मान, अंतरा गौरव सम्मान, शब्द -कोविद सम्मान। लगभग २५ अन्य सम्मान-पत्र।
मोबाइल नं. - 9302683229, 7869804680
पता - सुहाने भवन, जनता होटल के पास, महावीर नगर, रायपुर

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला - बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो. - 9424765259, ईमेल - antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-248-7
मूल्य 250/-